Publication date- 5th May 2024, Posting date- 9/10th May 2024. Place of posting- Naraina
संख्या No. U (W)-11/2024-26 RNI No. DELBIL/2005/16236 Postal Regn. No. DL (W) 10/2129/24-26

RNI No. DELBIL/2005/16236

श्रद्धा सबूरी

श्री साई सुमिरन टाइम्स

मासिक समाचार पत्र

वर्ष-20 अंक-8 नई दिल्ली मई 2024 वार्षिक मूल्य 500 रू. (प्रति कॉपी 50 रू.) पृष्ठ-16

साई मंदिर रोहिणी में स्थापना दिवस पर भजन व भंडारा

दिल्ली: दिनांक 12 अप्रैल 2024 को शिरडी साई बाबा मंदिर, सैक्टर-7, रोहिणी में मंदिर का स्थापना दिवस हर्षोल्लास के साथ मनाया गया। इस अवसर पर प्रात: 9 बजे से दोपहर 12 बजे तक श्रद्धेय पंडित श्रवण जी द्वारा भजनों का गुणगान किया गया। उन्होंने अनेक भजन सुनाकर पूरे माहौल को भक्तिमय बना दिया। वहां उपस्थित भक्तों ने उनके भजनों का आनंद लिया। दोपहर 12 बजे बाबा की आरती की गई और उसके पश्चात् भक्तों को भंडारा प्रसाद वितरित किया गया। मंदिर को गुब्बारों, लाईटों और फूलों से अति सुन्दर सजाया गया।

साई भक्तों में यह मंदिर मिन्नी शिरडी के नाम से जाना जाता है। यहां बाबा की मूर्ति बहुत खूबसूरत है और सभी को अपनी ओर आकर्षित करती है। यह मंदिर भक्तों की आस्था का ऐसा केन्द्र है जहां पर सभी भगवानों की मूर्तियां स्थापित हैं। मंदिर के प्रथम तल पर एक ध्यान-कक्ष बनाया गया है ताकि वहां पर भक्त बैठकर श्री साई सच्चरित्र का पारायण कर सकें। यहां आने वाले भक्तों की मनोकामनाएं पूर्ण होती हैं। वीरवार को मंदिर में भक्तों का तांता लगा रहता है और प्रतिदिन चारों आरतीयां, मंगल स्नान, भजन आदि होते हैं। हर वीरवार को शाम 6 बजे से 10 बजे तक भजनों का विशेष कार्यक्रम होता है और बाबा की पालकी निकाली जाती है।

मंदिर की समिति द्वारा मानव सेवा के भी अनेक कार्य किये जाते हैं। समिति द्वारा आर्थिक रूप से पिछड़े छात्रों को पढ़ाई के लिए तथा गरीब लोगों को इलाज के लिए आर्थिक मदद दी जाती है। गरीब कन्याओं के विवाह में भी आर्थिक मदद, वस्त्र आदि दिए जाते हैं जो कि अत्यंत सराहनीय है।

इस मंदिर की कार्यकारिणी समिति के सभी सदस्य बाबा को समर्पित हैं और बहुत ही कुशलता से मंदिर के सभी कार्यों को पूर्ण करते हैं। यहां सभी त्यौहार बड़ी श्रद्धा से मनाये जाते हैं। इन सभी कार्यक्रमों का आयोजन मंदिर के प्रधान श्री के.एल. महाजन, उपप्रधान श्री संजीव अरोड़ा, महासचिव श्री रमेश कोहली, कोषाध्यक्ष श्री अशोक रेखी, सचिव श्रीमती प्रोमिला मखीजा एवं सदस्य श्री पी.डी. गुप्ता, श्री बी.पी. मखीजा व श्री विमल शर्मा द्वारा बखूबी किया जाता है। **-गायत्री सिंह**

गुरूजी चन्द्रभानु सत्पती जी द्वारा एरोसिटी में साई मंदिर का उद्घाटन

दिल्ली: दिनांक 24 अप्रैल 2024 को एरोसिटी में नवनिर्मित शिरडी साई बाबा मंदिर का उद्घाटन गुरूजी चन्द्रभानु सत्पथी जी के कर कमलों द्वारा किया गया। यह मंदिर अत्यन्त सुन्दर है जिसमें विराजित बाबा की मूर्ति सब को अपनी ओर आकर्षित करती है। इस मंदिर का निर्माण GMR Group के MD श्री जी.एम. राव द्वारा किया गया। GMR Group के श्रीमती ग्रांधी वरलक्ष्मी एवं श्री जी.एम. राव ने गुरूजी का स्वागत किया। इस अवसर पर कई गणमान्य अतिथि, कई साई मंदिरों के ट्रस्टी, Bureaucrats व कई साई भक्त कार्यक्रम में शामिल हुए। साई मंदिर रोहिणी, के प्रधान श्री के.एल. महाजन जी को विशेषतौर से आमंत्रित किया गया। आरती के बाद सभी ने अत्यन्त स्वादिष्ट भोजन प्रसाद ग्रहण किया। वहां आए सभी अतिथियों को उपहार दिये गये। इस मंदिर के निर्माण के लिए भूमिपूजन 10 फरवरी 2023 को गुरूजी सत्पथी जी द्वारा किया गया था। **-पूनम धवन**

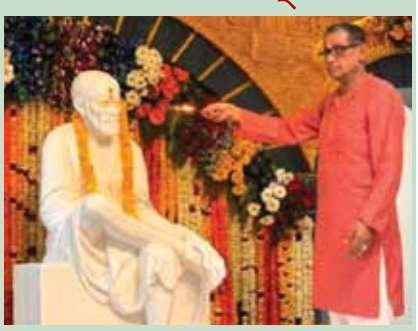

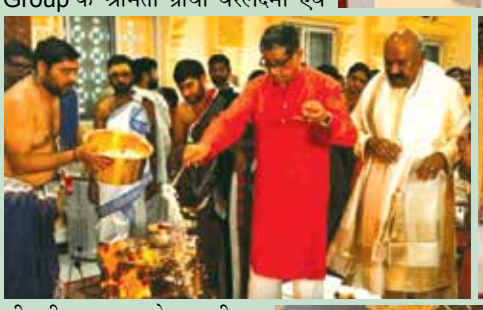

नामुमकिन को मुमकिन किया साई ने

मेरा नाम परिमीता है और मुझे विश्वास है कि बाबा अपने भक्तों का बहुत ख्याल रखते हैं। ऐसा एक बाबा का अद्भुत चमत्कार मेरे साथ हुआ। यह बात दिसम्बर 2014 की है, हम सर्दियों की छुट्टियों में इंदौर से कोलकाता जा रहे थे। जिस दिन हमें ट्रेन पकड़नी थी उस दिन खूब बारिश हो रही थी। हमारे साथ हमारे कुछ दोस्त भी जा रहे थे। हमारा दोस्त रूपेश हमें स्टेशन पर छोड़ने आया। जब ट्रेन आई तो हम सब लोग ट्रेन में बैठ गये। हमारे पास एक नीले रंग का बैग था। अगले दिन जब हमने अपना सामान देखा तो हमें नीला बैग कहीं भी दिखाई नहीं दिया। तब हमें लगा कि कहीं हम वो बैग इंदौर के स्टेशन पर ही तो नहीं छोड़ आए। हमें पूरा यकीन था कि हम वो बैग घर से स्टेशन लेकर आए थे। मेरे पति का चश्मा भी नहीं मिल रहा था। हमारा वो बैग और चश्मा दोनों प्लेटफार्म पर ही छूट गये थे। मेरे पति ने चश्मा पहन कर स्टेशन पर एक फोटो खिंचवाई थी जिससे हमें यकीन था कि वो चश्मा पहनकर आये थे।

छुट्टियां बिताकर 4 जनवरी 2015 को हम वापस इंदौर आए। मेरे पति ने जैसे ही चाबी से अपने घर का दरवाज़ा खोला तो वो अंदर जाते ही वापस बाहर भागा। मैं एकदम हक्की-बक्की रह गई। मैंने पूछा क्या हुआ, कोई सांप देख लिया क्या घर में? तभी मैंने देखा कि सामने नीला बैग पड़ा था। मैं हैरान थी कि नीला बैग, जो स्टेशन पर छूट गया था, वो हमारे घर में कैसे आया? उस पर मिट्टी और कीचड़ लगा हुआ था और साथ ही चश्मा भी रखा था। यह देखकर हमें लगा कि ये बैग स्टेशन से यहां कैसे पहुंचा। बैग पर कीचड़ और मिट्टी लगी हुई थी जो उस दिन बारिश के कारण उस पर लग गई थी। हमें लगा कि बाबा के सिवाय और कोई नहीं है जो ये चमत्कार कर सकता है। हमने अपने दोस्त रूपेश से भी पूछा कि कहीं तुमने तो ये बैग हमारे घर में नहीं छोड़ा? तो उसने कहा कि मैं उस बैग के बारे में कुछ नहीं जानता और मेरे पास आपके घर की चाबी भी नहीं थी। तब मुझे लगा कि जैसे बाबा कह रहे हों 'मैं हूं ना' जब भी आप मुश्किल में होंगे चाहे आप बाबा को बुलाओ या ना बुलाओ पर बाबा हमेशा आपके साथ रहते हैं। हालांकि मैंने बाबा से उस बैग के लिए कुछ कहा भी नहीं था क्योंकि मुझे लगता था कि जो बैग हमने स्टेशन पर छोड़ दिया उसका मिलना नामुमकिन था। हालांकि हमने रेलवे पुलिस में भी उस बैग के बारे में शिकायत दर्ज करवाई थी। ये बाबा की ही कृपा थी जो बाबा ने नामुमकिन को भी मुमकिन कर दिया। आज भी उस बैग को देखकर मेरे मन में बाबा के प्रति अपार श्रद्धा जागृत हो जाती है। ऐसे साई देवा को मेरा शत्शत् नमन। ओम साई राम।

-परिमीता कार, कोलकाता

श्री साईनाथ अस्पताल शिरडी को डायलिसिस मशीन का योगदान

शिरडी: श्रीमती तारा देवी फाऊंडेशन ग्रुप के संचालक, मुम्बई निवासी श्री आकाश गुप्ता ने शिरडी साई बाबा संस्थान के श्री साई नाथ अस्पताल को दो डायलिसिस मशीनें और दो बैड दान स्वरूप दिये। इन मशीनों की कीमत 23 लाख 50 हज़ार रूपये है। शिरडी संस्थान के मुख्य कार्यकारी अधिकारी श्री गोरक्ष गाडिलकर व साई भक्त श्री आकाश गुप्ता के कर कमलों से इन मशीनों की पूजा अर्चना करवाई गई। इस अवसर पर संस्थान के उपमुख्य अधिकारी श्री तुकाराम हुलवले श्री साईनाथ अस्पताल के डॉ. प्रीतम वडगावे, जनसम्पर्क अधिकारी श्री तुषार शेलके, साईनाथ अस्पताल की सहायक नज़मा सय्यद, बायो मेडिकल विभाग के इंजीनियर राजेश वाकडे, तुषार कुटे, प्रणाली काम्बले व स्टोरकीपर सुनील निकम आदि उपस्थित रहे। अस्पताल को इन मशीनों के मिलने से बहुत से मरीज़ों को इसका लाभ मिलेगा और उनका नि:शुल्क इलाज हो सकेगा। **-निलेश संक्लेचा**

लोभ करना है तो ईश्वर के नाम-जाप का लोभ करो। क्रोध करना है तो अनीतिपूर्ण कार्यों के प्रति क्रोध करो। आशा और इच्छा की लालसा हो तो मोक्ष की मन में अभिलाषा करो।

सम्पादकीय

दोस्तों, कभी आपने सोचा कि ये जीवन क्या है? संसार क्या है? सुख दुख क्या हैं और क्यों हैं? ईश्वर ने सुख के साथ दुख भी बनाये हैं क्योंकि यदि हम दुख नहीं झेलेंगे तो हमें सुख की अहमियत ही नहीं पता चलेगी। वैसे तो ज़िंदगी में दुख भी ज़रूरी हैं क्योंकि दुख की घड़ी में ही हमारी आध्यात्मिक उन्नति होती है और जीवन में भी प्रगति होती है। हमें अपने चरित्र को बलवान बनाने का अवसर मिलता है। परिस्थियों को झेलने का और उनका सामना करने का अवसर मिलता है। दरअसल दुख आने पर ही हम संवरते व संभलते हैं, दुनियां में अपने-पराये को समझते हैं। ज़िन्दगी में जैसी भी परिस्थिति हो उसे स्वीकार करने से हम उन परिस्थितयों का सामना आसानी से कर सकते हैं। दु:ख की घड़ी में घबराना नहीं चाहिये, संयम से काम लेना चाहिये। दुख के दिनों में ही हम ईश्वर के और भी करीब आते हैं हमारी भक्ति बढ़ती है, शक्ति बढ़ती है और विश्वास दृढ़ होता है। दुख के दिन तो गुज़र जाते हैं लेकिन भक्ति जीवन पर्यन्त हमारा नियम बन जाती है। जब हम नियमित रूप से भक्ति करते हैं तो सुख-दुख के अहसास से परे हो जाते हैं। अत: जीवन में दुख हो या सुख बाबा का स्मरण सदा करते रहना चाहिये। ये तो हम सब जानते ही हैं कि सुख-दुख हमारे अपने कर्मों के अनुसार हमें मिलते हैं, इसलिए सदा अच्छे कर्म और सत्य व्यवहार करके हमें अपने सुखमय भविष्य का निर्माण करना चाहिए। **-अंजु टंडन**

बाबा हर पल मेरे साथ हैं

मेरा नाम प्रेमा है और मैं मुम्बई में रहती हूं। मेरी बाबा में बहुत आस्था है और मेरा विश्वास है कि बाबा हमेशा हमारे साथ हैं।

हमारा एक केस कोर्ट में चल रहा था। मैं जब भी मैं कोर्ट में जाती थी तो मुझे बहुत डर लगता था और मैं हमेशा अपने पति से कहती कि क्यों कोर्ट कचहरी के चक्कर में पड़ गए। सन् 2019 में मेरे पति की तबीयत बहुत ज़्यादा खराब रहने लगी तो मेरे उपर ही सारी ज़िम्मेदारी आ गयी और मुझे अपने पति का सारा कारोबार संभालना पड़ा। मैंने बाबा से कहा कि आप मेरे साथ रहना और मुझे हिम्मत देना। मुझे अक्सर फोन पर मैसेज आते हैं जिसमें बाबा का जवाब मिल जाता है। उस दिन बाबा का मैसेज आया 'मैं कोर्ट में तुम्हारे साथ रहूंगा, मैं जानता हू कि कौन सही है और कौन गलत है, चिंता मत करो सब ठीक होगा।' उससे मुझे हिम्मत मिली और मैं आजतक बाबा के भरोसे ही चलती आ रही हूं।

एक दिन मैं कोर्ट में कुछ पेपर जमा कराने गई थी। जब मैं वहां पहुंची तो लिफ्ट के बाहर बहुत भीड़ थी किसी ने कहा कि दूसरी लिफ्ट से चले जाओ। मैं और लोगों के साथ वहां चली गई। वहां पर भी बड़ी भीड़ थी। मैंने सोचा कि मैं ऐसे ही यहां आ गई। जब मैंने ऊपर देखा तो मुझे वहां बाबा की फोटो दिखाई दी। जैसे बाबा ने मुझे कहा था कि मैं तुम्हारे साथ रहूंगा, बाबा ने मुझे उसका सबूत दे दिया कि बाबा मेरे साथ हैं। मैंने सोचा कि जैसे शामा से पहले बाबा गया पहुंच गये थे वैसे ही बाबा मेरे से पहले कोर्ट में आ गये।

कोर्ट का फैसला 20-25 दिन बाद आने वाला था तो मैं सोचती थी कि पता नहीं क्या होगा। मुझे फैसला आने से 20 दिन पहले फोन पर मैसिज आया कि 'तुम लम्बे अरसे से लड़ाई लड़ रही हो, जो बहुत कठिन थी, तुम थक गई हो और निराश हो गई हो, साई बाबा ने तुम्हें मैसेज भेजा है कि तेरी विजय होगी।' मुझे कुछ हौंसला मिला लेकिन मैं फिर भी डरती रहती थी। कोर्ट का फैसला आने से एक दिन पहले मुझे मैसेज आया कि 'कोर्ट केस का फैसला तुम्हारे हक में होगा, तुम जीतोगी और तुम्हारे कारोबार में तरक्की होगी।'

अगले दिन वीरवार को मैं कोर्ट में गई। मेरी आदत है कि मैं अपने साथ साई सच्चरित्र रखती हूं और जब भी समय मिलता है तो उसे पढ़ती हूं। उस दिन फैसला आने में समय था तो मैं साई सच्चरित्र पढ़ती रही। उस दिन जब हमारा फैसला आया तो कोर्ट ने कहा कि आपकी अपील मंज़ूर हो गई है और आपको एक करोड़ रूपया जमा करवाना है जो 90 दिनों के अन्दर आपको वापस मिल जायेंगे और आप यह केस भी जीत गई हैं। उस समय मेरे पास सिर्फ बीस लाख रूपये थे। मैंने बाबा से प्रार्थना की और मुझे किसी से पैसे मांगने भी नहीं पड़े और बाबा की कृपा से बाकी पैसों का इंतज़ाम भी हो गया। यह सब बाबा की कृपा ही है। मैं उन्हीं के भरोसे पर हर काम करती हूं। बाबा हमेशा मेरे साथ रहते हैं और बाबा ही मुझे हिम्मत देते हैं। ओम साई राम।

-प्रेमा अलमद, मुम्बई

बधाई हो बधाई

5 मई को साई मंदिर रोहिणी के मुख्य सचिव श्री रमेश कोहली जी व श्रीमती रेखा कोहली को शादी की सालगिरह पर हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाऐं।

जन्मदिन मुबारक

21 मई को साई मंदिर रोहिणी के प्रधान श्री के. एल. महाजन जी के जन्मदिवस के शुभ अवसर पर श्री उन्हें हार्दिक शुभकामनाऐं।

भगवान हैं

हमने ग्लोबल महापारायण ग्रुप की शुरूआत की जिसमें हमारे साथ हज़ारों भक्त जुड़े हैं और हम सब मिलकर श्री साई सच्चरित्र का पारायण करते हैं। मेरे साथ बाबा की कई लीलाएं हो चुकी हैं। दरअसल मेरे पास बाबा

की लीलाओं का खज़ाना है उसमें से मैं एक लीला के बारे में आप सबको बताना चाहूंगी।

सन् 2006 में मैं सही मायने में बाबा से जुड़ी। उससे पहले मैं सोचती थी कि पतानहीं भगवान हैं या नहीं। मेरे मम्मी पापा हनुमान जी के भक्त थे। कभी-कभी वो शिरडी भी जाते थे। मैं जब भी बाबा से अपनी पढ़ाई के बारे में कुछ मांगती थी तो वो अवश्य पूरा हो जाता था। मैं हर समय पूजा नहीं करती थी। जब परीक्षाएं होती थी तो मैं सभी भगवानों की पूजा करती थी। आप मुझे खुदगर्ज़ भी कह सकते हैं। पर मेरे मन में हमेशा यह रहता था कि भगवान हैं कि नहीं।

एक दिन मैंने बाबा से कहा कि मेरा जन्मदिन आ रहा है आप मुझे क्या उपहार देंगे? अगर आप मुझे सज़ा भी देते हैं और अगर मेरे लिए फायदेमंद है तो मुझे आपकी सज़ा भी मंज़ूर है। मुझे 12 बजे से पहले उपहार मिल जाना चाहिए तभी मैं उसे आपका तोहफा समझूंगी। प्रार्थना करने के बाद मैंने सोचा कि मैं बाबा से ये क्या मांग रही हूं। इसके बाद मैं व्यस्त हो गई और सब कुछ भूल गई। जब मैं स्कूल से घर आई तो मेरे परिवार वालों ने मेरे जन्मदिन के उपलक्ष्य में पार्टी का आयोजन किया। मुझे कुछ गिफ्ट मिले। मेरी मौसी और कई लोगों ने मुझे पैसों के लिफाफे दिये और कहा कि जो मर्ज़ी खरीद लेना। हम रात को करीब 11:45 मिनट पर घर आए और मैं सोने के लिए अपने कमरे में जाने लगी। मैं भूल गई थी कि मैंने बाबा से कुछ मांगा भी है। मेरी मम्मी ने कहा कि तोहफ तो देख ले। तब मैंने कहा कि सुबह देख लूंगी पर किसी शक्ति ने मुझे पीछे खींचा। मैंने मम्मी से कहा कि चलो अभी तोहफ देख लेते हैं। हमने सारे तोहफे देख लिए और लिफाफे भी देख लिए। मेरी मौसी जो मुझे लिफाफा देती थी वो उनके नाम का प्रिंटिड लिफाफा होता था पर उस दिन जो उन्होंने लिफाफा दिया वो साई बाबा की फोटो से बना था। जब मैंने बिना फाड़े वो लिफाफा पूरा खोला तो पूरी बाबा की फोटो निकली मैंने अचानक घड़ी देखी तो अभी 12 बजने में 3 मिनट बाकी थे। तब मुझे याद आया कि मैंने बाबा से तोहफा मांगा था। बाबा ने मुझे कोई सज़ा नहीं दी। तोहफे की जगह बाबा खुद मेरी ज़िन्दगी में आ गये, ये बताने के लिए कि भगवान हैं। उसके बाद मुझे बाबा पर विश्वास हो गया। अब ज़िन्दगी में कोई दो राय नहीं थी कि भगवान होते हैं कि नहीं। मेरा पूर्ण विश्वास बाबा पर हो गया। **-पूजा गर्ग**

बाबा ने मनचाही पोस्टिंग करवायी

मेरा नाम बलराम गुप्ता है। मैं बक्सर (बिहार) का रहने वाला हूं। बाबा के चरणों से मैं पिछले 23 सालों से जुड़ा हूं। मैं नित्य साई ज्ञानेश्वरी एवं साई सच्चरित्र का पठन एवं श्रवण करता हूं। मेरा ये मानना है कि मोह माया की इस दुनिया में यदि प्रभु कीर्तन, सद्ग्रंथो का अध्यन एवं श्रवण किया जाए तो ऐसा करना मानव जीवन के लिए बेहद लाभदायी साबित होगा। कलयुग में प्रभु का भजन, कीर्तन, सद्ग्रंथों का पठन एवं श्रवण करने से मन के अंदर के दुर्विचार दूर हो जाते हैं। ये बात तब की है जब मेरी पोस्टिंग तामिलनाडू के एक कस्बे सुलुर में थी। साल 2019 की बात है, तब मेरा बेटा सिद्धार्थ 12वीं पास कर चुका था और मेडिकल में एडमिशन की तैयारी कर रहा था। अत: उसको बेहतर कोचिंग की आवश्यकता थी। साथ ही मेरा छोटा बेटा वैभव जो की 8वीं कक्षा पास कर चुका था उसके लिए 12वीं कक्षा अगले 4 साल तक बेहतर शिक्षा एवं कोचिंग की ज़रूरत थी। साल 2019 में मेरा तमिलनाडू का 4 साल का कार्यकाल पूरा हो चुका था। मुझे एवं मेरी पत्नी को बहुत डर लग रहा था कि कहीं ऐसी वैसी जगह पर पोस्टिंग न आये जिससे मेरे दोनों बेटों की पढ़ाई एवं कोचिंग में समस्या हो जाए। इस दुविधा को भांपते हुए मैंने एजूकेशन ग्रांउड पर पोस्टिंग के लिए अपने डिपार्टमेंट में आवेदन किया ताकि मुझे उन्हीं चुनिन्दा जगहों पर पोस्टिंग किया जाए जहां उचित कैरियर कोचिंग की सुविधा हो, साथ ही मेडिकल कॉलेज/इंजीनियरिंग कॉलेज भी हो। मैंने उस आवेदन में चार विकल्प भरे थे, चंडीगढ़, अहमदाबाद, पुणे और अंतिम विकल्प दिल्ली का था। जबकि मैं दिल्ली वाला विकल्प नहीं भरना चाहता था क्योंकि 2010 से 2015 तक दिल्ली में ही मेरी पोस्टिंग थी और दिल्ली से ही मैं तमिलनाडू गया था। फिर से 4 साल बाद वापस दिल्ली की पोस्टिंग होना मेरे लिए एक सपना जैसा था। खैर, मेरा एजुकेशन ग्राउंड पर पोस्टिंग के लिए आवेदन स्वीकृत कर लिए गया। 'पर होत वही जो साई रची राखा'। अभी मेरा आवेदन अंडर प्रोसैस में

ही था की 10 मई 2019 को शाम के वक्त मेरे एक मित्र ने मुझे फोन पर सूचना दी की मेरा तबादला दिल्ली हो गया है। ये सुन कर मेरी आंखों से अश्रु की धारा प्रवाहित होने लगी। विश्वास करना मुश्किल हो रहा था। मैंने साई बाबा को मन ही मन शुक्राना किया। मैं भाग कर उसी रात अपने ऑफिस गया और पोस्टिंग का लैटर तीन चार बार पढ़ा फिर जाकर विश्वास हुआ। अब मैं जिसको भी ये बात बताता कि मेरी पोस्टिंग दिल्ली आ गयी है तो सब लोग यही कहते की तूने ज़रूर कोई पत्ता लगाया होगा। पर मैं सबको कैसे बताता की होत वही जो साई रची राखा। बाबा के आशीर्वाद से इन पिछले 5 सालों में मेरे दोनों बेटों की कोचिंग और शिक्षा दिल्ली में बहुत अच्छे से हुई। सिद्धार्थ Amity University, Noida से Biotechnology की पढ़ाई कर रहे हैं एवं छोटे बेटे वैभव Vellore Institute of Technology (VIT) से Computer Science की पढ़ाई कर रहे हैं। ये सब बाबा की ही कृपा से संभव हो सका। साई बाबा ईश्वर के एक अवतार हैं तथा भक्तों की मदद के लिए सदैव तत्पर रहते हैं। बाबा इतने कृपालु एवं दयालु हैं कि उन्हें अपने भक्तों की हर दुख तकलीफ ज्ञात रहती है। अब ये हमारे ऊपर है कि हम बाबा के ऊपर कितना विश्वास करते हैं।

-बलराम गुप्ता, बक्सर, बिहार

बधाई हो बधाई

दिनांक 24 मई को श्रीमति रूपाली सोनावने एवं श्री संदीप भाई सोनावने जी को उनकी शादी की सालगिरह की शुभकामनाऐं।

श्री साई सुमिरन टाइम्स
की सदस्यता लेने के लिए जानकारी

भारत में वार्षिक मूल्य डाक द्वारा 500 रू. व कोरियर द्वारा 700 रू.
आजीवन सदस्यता 11000 रू., विदेशों में वार्षिक मूल्य 2500 रू.

आप अपना सदस्यता शुल्क Paytm, M.O. या QR Code द्वारा या श्री साई सुमिरन टाइम्स के HDFC बैंक, खाता संख्या 01292000015826, IFSC: HDFC0000129 में Net banking या चैक से जमा कर सकते हैं। अथवा State Bank of India, खाता संख्या 35247638760, IFSC: SBIN0017413 में जमा कर सकते हैं। Ch/DD in F/o Shri Sai Sumiran Times. कृपया राशि जमा करने की सूचना अवश्य दें। आप अपना पता व फोन न. हमें email/whatsapp/sms या डाक द्वारा भेज सकते हैं। हमारा पता है: श्री साई सुमिरन टाइम्स, F-44-D, MIG Flats, Hari Kunj Society, Hari Nagar, New Delhi - 110064. Mob: 9212395615, 9818023070, Email: saisumirantimes@gmail.com

नोट: इसमें विज्ञापन देने के लिए भी सम्पर्क कर सकते हैं।

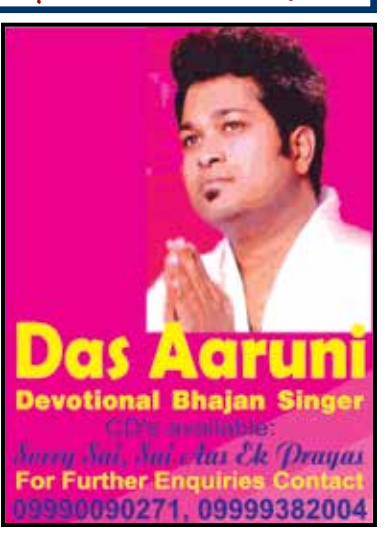

बधाई हो बधाई

दिनांक 28 अप्रैल को साई द्वारकामाई धाम, ललतोंकलां लुधियाना के प्रधान श्री अविनाश माटा जी व श्रीमती रेखा माटा जी ने अपनी शादी की 50वीं सालगिरह मंदिर में धूमधाम से मनाई। बहुत से लोगों ने वहां पंहुच कर उन्हें शुभकामनाऐं दीं। श्री साई सुमिरन टाइम्स की तरफ से हम बाबा से दुआ करते हैं कि बाबा का आशीर्वाद उन पर व उनके पूरे परिवार पर सदा बना रहे और उनका पूरा जीवन स्वस्थ, खुशहाल एवं सुखमय हो। -**अंजु टंडन**

गुरुजी की निगाहें करम मौत को दी मात

मेरा नाम सविता बल्हारा है, मैं नेब सराय दिल्ली की रहने वाली हूं और दिल्ली के ही गीता कॉलोनी में रहने वाले गुरुजी श्री सुशील कुमार मेहता जी के दरबार से करीब 15 साल से पूरी श्रद्धा भाव से जुड़े हुए हैं। जिसका मुख्य कारण है गुरुजी का कोमल हृदय, नि:स्वार्थ सेवा, अमीर गरीब व किसी भी जात-पात में कोई मतभेद ना रखना। वैसे तो मेरे अनेकों अनुभवों के किस्से हैं। मगर आज पहली बार मुझे इस श्री साई सुमिरन टाइम्स पत्रिका में एक किस्सा बताने का सौभाग्य प्राप्त हुआ है जिसको मैं बताने जा रही हूँ। मेरे पति पिछले करीब 3 साल से एक भयंकर बीमारी से जूझ रहे थे जिसके लिए हमने गुरुजी से ज़िक्र किया तो गुरु जी ने अपने आशीर्वाद से जल पढ़कर दिया और उसे नियमानुसार इस्तेमाल करने को कहा और परहेज़ केवल मांस मदिरा का सेवन न करने का बताया। मगर मेरे पति ने उस परहेज़ का पालन नहीं किया और एक तरफ गुरुजी पर उन्होंने अपनी आस्था भी कायम रखी मगर खान-पान में रोक लगाने में नाकामयाब ही रहे। उसका परिणाम यह हुआ कि हमें कई बार डॉक्टर का भी सहारा लेना पड़ता था पर हमें कोई राहत नहीं मिलती थी। वो फिर गुरुजी के आगे अपनी गलती स्वीकार करते और राहत लेते। ऐसा सिलसिला चलता आ रहा था, मगर एक रोज़ मेरे पति की मदिरा पीने से जब हालत गंभीर हो गई तो हमने किसी अस्पताल में दिखाकर उन्हें भर्ती करवा दिया। गुरुजी के पास जाने में संकोच हो रहा था क्योंकि मेरे पति मदिरा छोड़ते नहीं थे। यह गुरूजी द्वारा बताये हुए नियमों के विरुद्ध है। उधर अस्पताल वालों ने अगले दिन हमें यह कह दिया कि उनकी घर में ले जाकर सेवा करो, यह अब शायद दो-चार दिन ही जीवित रह पाऐंगे। यह सुनकर हमारे होश उड़ गए। हम इनको घर ले आए फिर ना जाने कहां-कहां हम भटके कि न जाने कहां से खैर पड़ जाए। मगर कहते हैं ना कि किसी भगवान या गुरु पर श्रद्धा रखो तो दिल से रखो अन्यथा शंका से रखी हुई या अपनी मनमानी से रखी हुई श्रद्धा वालों का भटकाव कभी समाप्त नहीं होता, जैसे हमारा हश्र हो रहा था। हमने अपने एक काबिल पंडित जी को अपने पति की जन्म कुंडली दिखाई तो पंडित जी ने उनकी जन्म कुंडली देखकर यह बताया कि यह तो कुछ ही पल के मेहमान हैं यानी कि उस दिन 7 अक्टूबर था और पंडित जी के कहे अनुसार 13 अक्टूबर उनका अंतिम दिन था। अनुमान लग रहा था कि मेरे पति की 13 अक्टूबर को जीवन लीला समाप्त हो सकती है, उधर डॉक्टर का भी लगभग यही इशारा था। अब हमारे पास केवल और केवल एक ही रास्ता था वह था गुरुजी का द्वार, उनकी शरण, उनका आशीर्वाद और उनकी कृपा जो कि मेरे पति के प्राणों की रक्षा का ज़रिया बन सकता है, मगर हमारे द्वारा उनका निरादर, उनको छोड़कर जगह-जगह धक्के खाना, उन नियमों का पालन न करना, अपनी झूठी श्रद्धा दिखाना यह सब बातें उन तक पहुंचने में हमें लज्जित कर रही थी, मगर मरता क्या न करता। अपने हालात को व कम समय को देखते हुए हम परिवार वालों ने यही फैसला किया कि भले ही हमें गुरुजी अपमानित करें या डांट फटकार लगायें या अपनी नाराज़गी ज़ाहिर करें हम यह सब सहन कर लेंगे मगर हमें चलकर अपनी गलती का पश्चाताप ज़रूर करना चाहिए और क्षमा मांगनी चाहिए।

हमें भरोसा है कि वह मेरे पति के प्राणों की रक्षा अवश्य करेंगे। फिर साहस करके हम अपने परिवार सहित गुरुजी के पास चले गए। उस दिन 8 अक्टूबर का दिन था, गुरुजी ने हमें देखकर हमेशा की तरह उसी अंदाज़ में बिठाया, खिलाया पिलाया, हमारी सारी बातें सुनी और हमारी किसी भी गलती का हमें एहसास तक नहीं होने दिया। गुरुजी के इस रवैये को देखकर हम अपने आप में घृणा महसूस कर रहे थे कि हमने जिन्हें धोखा दिया वह तो फिर भी सहानुभूति दिखा रहे हैं। खैर हमने गुरुजी को अपने पति के हालात बताते हुए और पंडित जी द्वारा 13 अक्टूबर की अंतिम दिन वाली बात भी बताई तो गुरु जी ने कहा कि मैं कल यानी की 9 अक्टूबर को कुछ लोगों सहित श्री बद्री विशाल धाम की यात्रा को उत्तराखंड जा रहा हूं किसी विशेष कार्य के लिए और आप चिंता मत करें। मैं 14 अक्टूबर को लौट आऊंगा फिर आप आ जाना। इस बात को सुनकर मैंने गुरूजी को कहा कि गुरुजी मेरा भी मन बहुत है कि बद्री विशाल मंदिर के दर्शन करने का, मगर मैं अपने पति को इस हालत में छोड़कर कैसे जाऊं जिनको पंडित जी ने कुंडली देखकर 13 अक्टूबर का अंतिम दिन बताया है, जिसके चलते अगर मैं आपके साथ संगत सहित जाती हूं और 13 तारीख को मेरे पति को कुछ हो गया तो मैं सारी -शेष पृष्ठ 14 पर

जन्मदिन मुबारक

1 मई डेज़ी | 7 मई सोनू चड्ढा | 10 मई बबलू दुग्गल

11 मई चन्द्रकांत जादव | 12 मई डा. माहेश्वरी | 13 मई मनहर उधास

21 मई एच.के. पेटवाल | 25 मई सीमा सोंधी | 25 मई रेनू मैगी

27 मई नरेश नागर | 28 मई राजेन्द्र गोयल | 31 मई पुनीत खुराना

शादी की सालगिरह मुबारक

4 मई:
उमा यादव
नरेन्द्र यादव

6 मई:
कृष्णा नागर
ब्रिजमोहन नागर

24 मई:
सुमन पालीवाल
प्रदीप पालीवाल

24 मई:
पिंकी व्यास
दिलीप व्यास

13 मई:
राजेन्द्र शर्मा
मंजु शर्मा

जन्मदिन मुबारक

5 मई को आहान महाजन के जन्म दिवस के शुभ अवसर पर उनके मम्मी पापा व दादा दादी इन्द्रा महाजन व श्री के.एल. महाजन की तरफ से हार्दिक शुभकामनाऐं।

बधाई हो बधाई

दिनांक 14 अप्रैल को साई मंदिर रोहिणी के ट्रस्टी श्री पी.डी. गुप्ता जी व श्रीमती उमा गुप्ता जी की पोती नताशा का शुभ विवाह हिमांशु कैथ के साथ धूमधाम से सम्पन्न हुआ। श्री साई सुमिरन टाइम्स की तरफ से हम बाबा से दुआ करते हैं कि नताशा एवं हिमांशु के जीवन में खुशियों के फूल सदा महकते रहें और बाबा का आशीर्वाद उन पर सदैव बना रहे।

स्वयं बुलाते हैं बाबा

यह बात सन् 1990 की है। उस समय मैं स्कूल में पढ़ता था। मुझे किसी ने एक फोटो दी वो साई बाबा की फोटो थी, पर मैं उस समय बाबा को पहचानता नहीं था, अगर मुझे कोई धार्मिक फोटो मिलती थी तो मैं उसे इधर-उधर नहीं फैंकता था, उसे रख लेता था। मैंने वो फोटो घर लाकर अपनी मम्मी को दे दी और उन्होंने वो फोटो जहां हम पूजा करते थे वहां रख दी। दो दिन के बाद हमारे पड़ोस में रहने वाली एक आंटी ने कहा कि लोधी रोड में एक बाबा का मंदिर है चलो वहां चलते हैं। लोधी रोड घर के पास ही था तो हमने कहा चलो चलते हैं। जब हम वहां पहुंचे और मैंने जब बाबा की मूर्ति को देखा तो मुझे लगा कि मुझे जो फोटो मिली थी वो साई बाबा की थी। तब मुझे लगा कि शायद भगवान मुझे कोई संकेत दे रहे हैं।

उसी रात मुझे बाबा सपने में आए और मैंने सपने में देखा कि मैं लोधी रोड साई मंदिर के बाहर घूम रहा हूं, वहां बाहर सड़क से ही बाबा दिखाई देते हैं और बाबा मुझे मंदिर के अंदर से बुला रहे थे। बाबा ने कहा- मेरे पास आओ। मैंने कहा कि मैं आपको नहीं जानता आप मुझे मत बुलाओ। मैं वहां से जाने लगा। तभी मैंने देखा कि बाबा के दस हाथ हैं उन्होंने सोने का मुकुट पहना है जिस पर मोर पंख लगा हुआ है। मैं उनके पास गया, उन्होंने मुझे बहुत प्यार किया और आशीर्वाद दिया।

हम लोग बंगाली हैं और हम दुर्गा माता की पूजा करते हैं। अगले दिन मैंने अपनी नानी को फोन करके उन्हें सपने के बारे में बताया। नानी भी बाबा के बारे में नहीं जानती थी। उन्होंने कहा कि वो जो कोई भी थे वो तुम्हें ये बता रहे थे कि तुम चाहे किसी को भी मानते हो वो सब मेरे अंदर समाए हैं और तुम्हें यही समझ कर उनकी पूजा करनी चाहिए। तभी से मेरी बाबा के साथ एक नये रिश्ते की शुरूआत हुई।

मेरी पूरी ज़िन्दगी बाबा के चमत्कारों से भरी हुई है। जिन पर मेरी पत्नी ने दो किताबें भी लिखी हैं। मेरे साथ जो चमत्कार हुए उनसे एक ही बात समझ आती है कि बाबा हमेशा मेरे से एक कदम आगे चल रहे हैं। सन् 2020 में कोरोना काल में सभी को नौकरियों की समस्या हो गई थी। मुझे 14-15 घंटे कम्प्यूटर पर काम करना पड़ता था जिससे मेरे कंधे में दर्द शुरू हो गया। इससे एक हफ्ता पहले मुझे सपना आया कि मैं और मेरी पत्नी छुट्टियां मनाने कहीं गए हैं, हम ऑटो से कहीं जा रहे हैं तभी रास्ते में साई मंदिर आया तो ऑटो वाले ने कहा कि दो मिनट साई बाबा मंदिर रूकना है अगर आप भी अंदर चलोगे तो जल्दी हो जायेगा। हम मंदिर में गये। मैंने देखा कि मेरी पत्नी बाबा के सामने खड़ी होकर प्रार्थना कर रही है। मैंने देखा कि साइड में एक पर्दा लगा हुआ है मैंने सोचा कि पर्दा हटा कर देखता हूं कि वहां पर क्या है। मैंने वहां देखा कि बाबा ज़मीन पर लेटे हुए हैं। उनके हाथ के नीचे तकिया था और बायां साइड बिल्कुल हिल नहीं रहा था और वो उठ नहीं पा रहे थे। बाबा को देखकर मैं रोने लगा। वो खुशी के आंसू थे क्योंकि मैं बाबा को देखकर बहुत खुश हुआ। बाबा ने मुझे कहा कि हम कितनी देर के बाद मिले हैं तुम रोओ मत और बाबा ने मुझे आशीर्वाद दिया।

अगले दिन मैंने अपनी पत्नी को अपने इस सपने के बारे में बताया कि बाबा बीमार थे और उनका बायां साईड हिल नहीं रहा था। उस घटना के एक हफ्ते बाद ही मेरे बायें कंधे में चोट लग गई और करीब 8-9 महीने मुझे तकलीफ रही। कोविड का समय होने के कारण डॉक्टर किसी को व्यक्तिगत रूप से नहीं देख रहे थे। कुछ समय बाद मुझे समझ आया कि मेरे ऊपर कष्ट आने से पहले ही बाबा ने मुझे संकेत दे दिया था। उन दिनों मैंने बाबा को हर पल अपने साथ महसूस किया।

बाबा की कृपा के ऐसे कई चमत्कार मेरे साथ हुए हैं और हर बार मुझे बाबा ने एक सीख भी दी है। बाबा आज शारीरिक रूप में नहीं हैं लेकिन वो किसी न किसी रूप में भक्तों की मदद करने आ जाते हैं।

हमारे जीवन में उदि और श्री साई सच्चरित्र का बहुत महत्व है। सन् 2012 में जब मेरे पिता का निधन हो गया था तो मैं बहुत निराश हो गया था और मेरी तबीयत बहुत ज़्यादा खराब हो गई। डॉक्टर ने मुझे बहुत सारी दवाईयां दी। तब मैंने बाबा से प्रार्थना की कि मुझे दवाईयां नहीं खानी और मैंने रोज़ पानी के साथ उदि लेना शुरू कर दिया, जो मैं आज तक ले रहा हूं। 2012 से लेकर आज तक मुझे न कोई बिमारी हुई और न ही मैंने कोई दवाई खाई और मेरी सारी रिपोर्टस नार्मल हैं। ये सब केवल बाबा की ही कृपा है।

-**सुजीत कुमार**, गुड़गांव

श्री साई सुमिरन टाइम्स की सदस्यता एवं विज्ञापन के लिए सम्पर्क करें
Ph: 9818023070
9212395615
saisumirantimes@gmail.com

शिरडी साई बाबा मंदिर नोयडा में बाबा की पालकी शोभा यात्रा

नोयडा: श्रद्धा, भक्ति, विश्वास एवं प्रेम के प्रतीक शिरडी साई बाबा मंदिर, सैक्टर-40, नोयडा में रामनवमी उत्सव दिनांक 17 अप्रैल 2024 को हर्षोल्लास के साथ मनाया गया। इस अवसर पर साई बाबा की विशाल पालकी शोभा यात्रा निकाली गई। दोपहर 3 बजे से मंदिर परिसर से पालकी यात्रा आरंभ हुई जो नोयडा के विभिन्न सैक्टर 40, 39, 50, 51, 41 से होते हुए सांय 7 बजे पुन: मंदिर में

वापस पहुंची। पालकी यात्रा के दौरान रास्ते में जगह-जगह पर भक्तों द्वारा पालकी का स्वागत किया गया। जगह-जगह पर भक्तों के लिए जलपान की व्यवस्था की गई। बहुत से भक्त साई नाम के जयकारे लगाते हुए पालकी के साथ-साथ चले।

सांयकाल 7 बजे से 9:30 बजे तक मंदिर में भजन कीर्तन किया गया जिससे पूरा माहौल भक्तिमय हो गया। मंदिर का हॉल भक्तों से भरा था। सभी भक्तों ने साई बाबा और भगवान श्री राम का आशीर्वाद प्राप्त किया। श्री साई समिति नोयडा द्वारा सभी भक्तों के लिए भंडारे का आयोजन भी किया गया।

कार्यक्रम का आयोजन श्री साई समिति नोयडा के सदस्यों द्वारा बखूबी किया गया।

साई मंदिर रोहिणी में नवरात्र पर माता की चौकी

दिल्ली: शिरडी साई बाबा मंदिर, सैक्टर-7, रोहिणी में दिनांक 9 अप्रैल से 17 अप्रैल तक नवरात्रि त्यौहार की धूमधाम रही। इस अवसर पर पूरे मंदिर को फूलों, गुब्बारों और रंग बिरंगी लाईटों से सजाया गया।

दिनांक 15 अप्रैल को मंदिर में 7:30 बजे से रात 10 बजे तक मंदिर में माता की चौकी का आयोजन किया गया। इस अवसर पर मंदिर के हाल में माता का सुंदर दरबार सजाया गया। महामाई निष्काम सेवा सभा के कलाकारों ने माता के भजन सुनाए, भक्तों ने तालियां बजा कर अपनी हाज़री लगाई और कई भक्तों ने भजनों पर डांडियां नृत्य भी किया। भजनों के अंत में माता की आरती और उसके पश्चात् शेज आरती के साथ कार्यक्रम का समापन हुआ।

कार्यक्रम का आयोजन मंदिर के प्रधान श्री के.एल. महाजन, उपप्रधान श्री संजीव अरोड़ा, महासचिव श्री रमेश कोहली, कोषाध्यक्ष श्री अशोक रेखी, सचिव श्रीमती प्रोमिला मखीजा एवं सदस्य श्री पी.डी. गुप्ता, श्री बी.पी. मखीजा व श्री विमल शर्मा के मार्गदर्शन में किया गया। **-गायत्री**

साई मंदिर आदर्श नगर में माता की चौकी

दिल्ली: दिनांक 11 अप्रैल 2024 को आदर्श नगर स्थित सुप्रसिद्ध शिरडी साई बाबा मंदिर में नवरात्रों के दौरान माता की चौकी का आयोजन किया गया। पूरे मंदिर को गुब्बारों, फूलों और लाईटों से अति सुन्दर सजाया गया। इस अवसर पर मंदिर

में मैय्या के भजनों का गुणगान कमला बहन जी द्वारा किया गया। बहुत से भक्तों ने इस कार्यक्रम में शामिल होकर मैय्या एवं साई बाबा का आशीर्वाद लिया। कार्यक्रम का आयोजन मंदिर के संस्थापक एवं बाबा के परम भक्त श्री बी.पी. मखीजा जी के मार्ग दर्शन में किया गया। **-कृष्णा पुरी**

शादी की सालगिरह पर हर्ष पटूना द्वारा साई भजन

दिल्ली: दिनांक 17 अप्रैल 2024 को चौधरी धर्मशाला, आनन्द पर्वत में नारनोलिया परिवार द्वारा साई भजन संध्या का आयोजन किया गया। श्री ओमप्रकाश एवं श्रीमती सरस्वती देवी जी की शादी की 40वीं वर्षगांठ के अवसर पर बाबा का आशीर्वाद पाने हेतु उनके बच्चों ने साई भजन संध्या का आयोजन करवाया। इस शुभ अवसर पर देव नगर साई मंदिर से आनन्द पर्वत तक साई बाबा की पालकी ढोल ताशों के साथ निकाली गई। उसके बाद शाम 7 बजे चौधरी धर्मशाला में साई संध्या में सच्चिदानंद प्रोडक्शन के गायक हर्ष साई एवं श्री श्याम कमल जी द्वारा भजनों का गुणगान किया गया। उन्होंने अपने भजनों से सभी को भाव विभोर कर दिया। सभी भक्तों ने भजनों पर खूब नृत्य किया पूरा माहौल बाबा की मस्ती से भरा था। कार्यक्रम के अंत में आरती की गई और उसके पश्चात् सभी भक्तों ने स्वादिष्ट भोजन प्रसाद ग्रहण किया। **-जी.आर. नंदा**

श्री साई धाम मंदिर हम्बड़ा रोड लुधियाना

लुधियाना: श्री साई धाम मंदिर, हम्बड़ा रोड में एम.एल.ए. श्रीमान गुरप्रीत सिंह गोगी जी बाबा के दर्शन करने और आशीर्वाद प्राप्त करने आए। इस अवसर पर श्रीमान अदीश धवन जी (अध्यक्ष), श्रीमान संजय सूद जी (प्रधान), श्रीमान राजेश शर्मा जी (सचिव) और श्रीमान सुहेल

ग्रोवर जी ने उनका स्वागत किया। उन्होंने बाबा के समक्ष बैठकर सभी के लिए प्रार्थना की। बाबा के दर्शन करके और बाबा का आशीर्वाद प्राप्त करके वह प्रफुल्लित हो गए।

बाबा के दर्शन करने के बाद वह लंगर हॉल गए। श्रीमान संजीव अरोड़ा जी (मैनेजर साई धाम) ने उन्हें लंगर हाल दिखाया और लंगर हाल में लगी सभी ऑटोमैटिक मशीनों से अवगत करवाया। गुरप्रीत गोगी जी ने बाबा का लंगर प्रसाद ग्रहण किया और बाबा का आशीर्वाद प्राप्त किया। **-संजीव अरोड़ा,** प्रबंधक-साई धाम, लुधियाना

साई युवक मंडल द्वारा अमलसाद में निकली पालकी

गुजरात: गुजरात के नवसारी ज़िले के गणदेवी तालुका के अमलसाद से साई युवक मंडल द्वारा 13वीं सालगिरह पर बाबा की पालकी बड़ी धूमधाम से निकाली गई। ये पालकी अमलसाद के सरीखुरद गांव से 25 अप्रैल को

सुबह 8 बजे निकल कर पूरे सरीखुरद गांव और अमलसाद में होते हुए लूसवाडा गांव, छापर गांव, कलमथा गांव, मोरली गांव घोल गांव, राभल गांव, भाथा गांव भेसला गांव, देवधा गांव, वजीफा गांव से होते हुए वापस सरीखुरद गांव मंदिर में पंहुची। पूरे दिन लोगों ने पालकी के दर्शन किये। मंदिर के मुख्य आयोजक जयेश भाई, संदीप भाई (गांव के सरपंच), विमल भाई, उर्वश भाई की ओर से ये आयोजन किया गया। अगले दिन 26 अप्रैल को सुबह साई यज्ञ और दोपहर को महा प्रसाद का आयोजन किया गया जिसमें करीब 5000 भक्तों ने महा प्रसाद का लाभ लिया। रात को 8 बजे लोक दायरा का भी आयोजन किया गया। **-परेश पटेल**

साई मंदिर आदर्श नगर में रामनवमी उत्सव

दिल्ली: शिरडी साई बाबा मंदिर, एफ-1, अशोक रोड, आदर्श नगर एक्सटेंशन में दिनांक 17 अप्रैल 2024 को रामनवमी महोत्सव बड़े ही धूमधाम से मनाया गया। इस शुभ अवसर पर बाबा के भजनों का गुणगान विश्वविख्यात कलाकार शिल्पी मदान जी एवं प्रवीन मलिक जी द्वारा किया गया। प्रवीन मलिक जी व शिल्पी मदान जी ने अनेक मनभावन भजन सुनाकर पूरे माहौल को साईमय बना दिया। उन्होंने भक्तों की फरमाईशों पर भी भजन गाये। सजा दो घर को गुलशन सा, तुम दो कदम बड़ो, मेरे घर के आगे साईनाथ तेरा मंदिर बन जाए, हारा हूं बाबा आदि भजनों पर भक्त झूम उठे। सांय 7:30 बजे केक काटा गया तथा सभी भक्तों को प्रसाद स्वरूप दिया गया। अंत में सबने बाबा का भंडारा ग्रहण किया। सभी भक्तों ने इस आयोजन का भरपूर आनंद लिया। कार्यक्रम का आयोजन मंदिर के चेयरमैन एवं बाबा के परम भक्त श्री बी.पी. मखीजा जी के मार्गदर्शन में मंदिर समिति के सदस्यों द्वारा बखूबी किया गया। **-कृष्णा पुरी**

साई सेवा समिति द्वारा आयोजित भजन संध्या में पुनीत खुराना के भजनों की धूम

दिल्ली: दिनांक 27 अप्रैल 2024 को साई सेवा समिति के सदस्यों द्वारा सनातन धर्म मंदिर, शंकर रोड, न्यू राजेन्द्र नगर में 17वीं विशाल साई भजन संध्या का आयोजन किया गया। बाबा का सुन्दर दरबार गुरूबचन जी द्वारा सजाया गया। भजनों का गुणगान करने के लिए सप्रुसिद्ध गायक पुनीत खुराना जी को आमंत्रित किया गया। पुनीत जी ने अपने चिरपरिचित अंदाज़ में कई मनभावन भजन सुनाए। उनके मस्ती भरे भजनों पर भक्तों ने खूब नृत्य किया। पुनीत जी के भजनों को भक्तों ने खूब सराहा और तालियां बजाकर उनका साथ दिया। पूरा मंदिर भक्तों से खचाखच भरा हुआ था और सभी बाबा की मस्ती में मस्त नज़र आए।

सभी भक्तों के लिए स्वादिष्ट भंडारे प्रसाद की व्यवस्था की गई। कार्यक्रम का आयोजन साई सेवा समिति के प्रेज़ीडेंट श्री एम.एम चड्डा, वाईस प्रेज़ीडेंट श्री संदीप जोशी, जनरल सैक्रेटरी संजय वाधवा, सहसचिव श्री रमेश चांदवानी, पब्लिसिटी हैड श्री राजीव सरपाल, भंडारा इंचार्ज श्री दामोदर मल्होत्रा एवं साई सेवा समिति ओल्ड राजेन्द्र नगर के सभी सदस्यों द्वारा अत्यंत सुचारू रूप से किया गया और श्री एन.के. खन्ना जी का सहयोग भी अत्यन्त सराहनीय रहा। **-राजेन्द्र सचदेवा**

युवा सेवा मंडल द्वारा हरि कुंज में माता की चौकी

दिल्ली: दिनांक 28 अप्रैल 2024 को युवा सेवा मंडल द्वारा हरिकुंज सोसायटी के पार्क में माता की चौकी का भव्य आयोजन किया गया। माता का दरबार गुब्बारों, फूलों और लाईटों से बहुत ही सुन्दर सजाया गया जो सबको अपनी ओर आकर्षित कर रहा था। कार्यक्रम का शुभारंभ सांय 7 बजे पूजा अर्चना से हुआ। उसके बाद भजनों का गुणगान आरंभ हुआ। सुप्रसिद्ध गायक विपिन भल्ला जी एवं उनके साथी कलाकारों ने माता की मधुर भेंटें सुनाकर सभी को मंत्रमुग्ध कर दिया। इस अवसर पर हनुमान जी, राधा कृष्ण, विष्णु जी की अति सुन्दर झांकियां भी प्रस्तुत की गई जिसका लोगों ने खूब आनंद लिया। क्षेत्र की विधायक राजकुमारी ढिल्लों और आम आदमी पार्टी के श्री महाबल मिश्रा जी ने भी इस कार्यक्रम में पहुंचकर माता रानी का आशीर्वाद लिया। पूरा पंडाल भक्तों से खचाखच भरा हुआ था और कई भक्तों ने भावविभोर होकर भजनों पर नृत्य भी किया। आरती से कार्यक्रम का समापन हुआ। उसके पश्चात् सभी भक्तों ने पंक्तिबद्ध बैठ कर स्वादिष्ट लंगर प्रसाद का आनंद लिया। कार्यक्रम का आयोजन अनुज नारंग, मानव सनेजा, रोहित भाटिया, हरप्रीत सिंह दुग्गल, (हनी) मनीष भाटिया, गुरबचन सिंह, एच.पी.एस. ओबराय, नितिन कोहली और महेश त्रिपाठी जी द्वारा बखूबी किया गया। आयोजकों ने सभी को हलवे और चने के प्रसाद का डिब्बा देकर विदा किया। **-कृष्णा पुरी**

'करूणासागर साई' पुस्तक का साई मंदिर रोहिणी में विमोचन

दिल्ली: शिरडी साई बाबा मंदिर, सैक्टर-7, रोहिणी में 18 अप्रैल 2024 को बाबा के परम भक्त, सुप्रसिद्ध लेखक एवं गायक डॉ. रबिन्द्र नाथ ककरिया जी की नई रचना 'करूणासागर साई' पुस्तक का विमोचन साई बाबा के समक्ष किया गया। 'करूणासागर साई' का विमोचन मंदिर के प्रधान श्री के.एल. महाजन, महासचिव श्री रमेश कोहली, कोषाध्यक्ष श्री अशोक रेखी, स्टर्लिंग पब्लिशर्स के एम.डी. श्री सुरेन्द्र घई व श्री सहगल के कर-कमलों द्वारा किया गया। 'करूणासागर साई' का प्रकाशन स्टर्लिंग पब्लिशर्स द्वारा किया गया। इस अवसर पर डॉ. रबिन्द्र नाथ ककरिया जी ने अपनी मधुर वाणी में कुछ भजन भी प्रस्तुत किये जिसका वहां पर उपस्थित सभी भक्तों ने खूब आनन्द लिया। पूरा हॉल भक्तों से खचाखच भरा था। डॉ. रबिन्द्र नाथ ककरिया जी ने मंदिर समिति के सदस्यों की सराहना करते हुए उनका आभार प्रकट किया।

'करूणासागर साई' पुस्तक में साई बाबा के समकालीन भक्तों के अनुभव हैं जिन्हें साई बाबा का अलौकिक सानिध्य प्राप्त हुआ। बाबा की दिव्यता का अनुभव कर इन भाग्यशाली भक्तों का जीवन धर्मनिष्ठता, नैतिकता एवं आध्यात्मिक प्रगति की ओर अग्रसर हुआ। यह पुस्तक उन भक्तों की सेवा, भक्ति एवं गुरू के प्रति पूर्ण निष्ठा और विश्वास की अद्वितीय कथाओं का संकलन है, जो अत्यंत रोचक है।

बहुमुखी प्रतिभा के धनी और शिरडी साई बाबा के परम भक्त डॉ. रबिन्द्र नाथ ककरिया जी का जन्म 19 मार्च 1967 को दिल्ली में हुआ। दिल्ली विश्वविद्यालय से भौतिक विज्ञान में एम.एम.सी. और पी.एच.डी. की डिग्री प्राप्त कर आपने अध्यापन को अपना कार्य-क्षेत्र बनाया। साई की कृपा, जन्मजात संस्कार और परिवार के आध्यात्मिक परिवेश ने छात्र-जीवन से ही इन्हें अध्यात्म की तरफ मोड़ दिया। अध्यापन सम्बंधी कर्त्तव्यों का निर्वहन करते हुए भी इनकी लेखनी साई सद्-साहित्य की रचना में निर्बाध गति से व्यस्त रही। वे शिरडी साई बाबा की अद्भुत जीवनी, अमूल्य उपदेशों, लीलाओं व उनके भक्तों से संबंधित जानकारी को एकत्रित, संकलित व अनुवादित कर हिंदी और अंग्रेजी भाषा में लिपिबद्ध कर जन-समाज को दुर्लभ, गहन और विस्तृत जानकारी उपलब्ध करवा, साई की दिव्य शक्तियों की महिमा चारों ओर फैला रहे हैं। साई बाबा पर उनकी अब तक पच्चीस पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं जो अत्यंत सराहनीय है। **-कृष्णा पुरी**

सद्गुरू निलायम मंदिर कोलकात्ता में नरेन्द्र नाशिरकर द्वारा साई कथा

कोलकात्ता: दिनांक 11, 12 व 13 अप्रैल 2024 को सद्गुरू निलायम ट्रस्ट, बोसपारा इटकोला, खरदा, कोलकात्ता में संगीतमय साई कथा का आयोजन किया गया। साई कथा के वाचन के लिए नागपुर के जाने माने कथाकार श्री नरेन्द्र नाशिरकर जी को आमंत्रित किया गया। उन्होंने अपनी मधुर आवाज़ में संगीतमय कथा भक्तों के सामने प्रस्तुत की। सभी भक्तों ने उनकी गायकी व कथा का आनन्द लिया। कथा के दौरान उन्होंने भजन भी प्रस्तुत किये। कथा के बाद सभी भक्तों को भंडारा प्रसाद वितरित किया गया। इस कार्यक्रम में शामिल होने के लिए शिरडी से श्री गोपीनाथ कोते पाटिल जी व धूपगांव से स्वामी बलदेव भारती जी भी कोलकात्ता पधारे। कार्यक्रम में भक्तों ने बढ़चढ़ कर हिस्सा लिया और साई बाबा का आशीर्वाद प्राप्त किया। कार्यक्रम के आयोजन में सद्गुरू निलायम ट्रस्ट के सभी सदस्यों का भरपूर सहयोग रहा। **-सुशीला अग्रवाल**

श्रद्धा सबूरी
LEKH RAJ & SONS
JEWELLERS
For Exclusive
Gold, Diamond, Kundan, Silver Jewellery
Shop No. 3, B-33, Kalkaji New Delhi-19
Phone 26438272

बाबा के चरणों में
सरगम स्टूडियो
Producer of Films, Radio & TV Serials
E-23-B, Lajpat Nagar-2, New Delhi - 110024 Ph. No. 2981-5747

Anish Tahim
New Prominent Tailors
Specialist in Ladies & Men's Wear
K-25, Opp. Plaza, Connaught Place, New Delhi-110001
Tel.: 23418665, 51513273, 55355016
Mobile: 9810027195

शिरडी के धन्वंतरी-श्री साई महाराज

भारत की लम्बी संत-परम्परा में हम ऐसे अनेकों ईश्वर भक्त महात्माओं की गिनती कर सकते हैं, जिनका नाम मात्र लेने से ही भक्तों के पाप नष्ट हो जाते हैं, रोग नष्ट हो जाते हैं और उन्हें नवजीवन भी प्राप्त हो जाता है। इसी पुनीत संतपरम्परा में महाराष्ट्र के संत, परब्रह्म के ईश्वरीय अवतार श्री साईनाथ महाराज का नाम श्रद्धालु भक्त बड़े आदर से स्मरण करते हैं। इस महान विभूति ने अपने जीवन-काल में लोक कल्याण के इतने आलौकिक तरीके से अपने भक्तों के रोग, कभी अपने ऊपर लेकर कभी मात्र दृष्टि भर देखने से तो कभी मात्र अपने शब्दों से दूर किये। जिन्हें भक्तों ने चमत्कार का नाम दिया। यथार्थ में साई बाबा मानो मनुष्य रूप में दूसरे धन्वंतरी ही थे। सदेह समय सहस्त्रों मनुष्यों को बाबा द्वारा रोगों को दूर करने का अनुभव मिला। श्री हेमांडपंत जी ने श्री साई सच्चरित्र में बहुत ही सुंदर लिखा है कि 'अपने लोकप्रिय गुणों के कारण बाबा की कीर्ति दूर-दूर तक फैल गई थी। उन्होंने प्रत्येक भक्तों को जो उनके श्री चरणों में आए उन्हें स्वास्थ्य प्रदान किया। इस प्रसिद्ध 'डॉक्टरों के डॉक्टर, मसीहों के मसीहा ने कभी अपने स्वार्थ की चिन्ता न कर अनेक विघ्नों का सामना किया तथा स्वयं असहनीय वेदना व कष्ट सहन कर दूसरों की भलाई की, नवजीवन दिया।

अनेक बार भक्तों के हृदय में मात्र साई महाराज के प्रति मनोमय श्रद्धा की भावना ही उपयोगी सिद्ध होती थी। 'बेलापुर के समीप तुर्मे ग्राम में रहने वाली शांताबाई नाम की महिला सात-आठ साल से बाये हाथ के अंगूठे की हड्डी में एक रोग से पीड़ित थी। उपचार भी कोई आराम नहीं दे रहा था। उसने श्री बाबा की मनोभाव से आराधना की। बाबा ने प्रसन्न हो एक रात स्वप्न में दर्शन देकर, एक विशिष्ट औषधि के उपयोग का परामर्श दिया। शांताबाई ने बाबा श्री द्वारा कही गई औषधि का प्रयोग किया तो कुछ ही दिनों में उसका रोग दूर हो गया। शांताबाई ने अपने हाथ से 1 सितम्बर 1918 को बाबा श्री को पत्र लिख उन्हें प्रणाम कर उन्हें अनेकों धन्यवाद दिया।' (साभार- श्री साई लीलामृत)

साई बाबा जी की वाणी व उनके द्वारा कहे गए शब्द भी सच्ची औषधि थी, मात्र उन शब्दों से ऐसे-ऐसे रोगों का उपचार हुआ-जिसकी उस समय कल्पना करना संभव नहीं था।

आलंदी के स्वामी बाबा के दर्शन करने हेतु शिरडी आये। उनके कान में असहाय पीड़ा थी। जब शामा ने बाबा से कहा, स्वामी के कान में पीड़ा है, इन पर कृपा करे, तो बाबा श्री ने मात्र यही कहा, 'अल्लाह अच्छा करेगा।' स्वामी ने घर पहुंचकर काका जी को एक पत्र लिखा श्री साई महाराज की दिव्य प्रभा का वर्णन करना इस संसार में असंभव है। बाबा की कृपा से कान में पीड़ा व सूजन कम हो गई। अंग्रेज डाक्टर अंडरवुड जिसने ऑपरेशन की सलाह दी थी, जब मैं पुन: उसके पास गया तो उसने ऑपरेशन कराने को मना कर दिया। कुछ दवाइयों के सेवन से मैं पूर्णतया ठीक हो गया। यह सब साई महाराज के श्री मुख से निकले 'अल्लाह अच्छा करेगा' शब्दों के बाद ही हुआ है।

तात्या साहेब नूलकर पंढरपुर में सब जज कार्यरत थे। एक समय उनकी आंखों में ऐसी तकलीफ हो गई कि हर वस्तु दो-दो दिखाई देने लगी। बाबा के परम भक्त होने के कारण वे शिरडी आ गये। बाबा तो भक्त वत्सल थे, कैसे अपने भक्त को तकलीफ में देखते। अगले दिन बाबा बोले, 'शामा, आज मेरी आंखों में बहुत दर्द हो रहा है।' आश्चर्य, उसी समय से नूलकर की आंखे ठीक होने लगी। शीघ्र ही उनके नेत्रों का दोष दूर हो गया। क्या बाबा श्री के शब्द औषधि नहीं थे? सत्य में बाबा शिरडी नहीं अपितु विश्व के धन्वंतरी थे। डॉक्टरों के डाक्टर, मसीहों के मसीहा। अध्याय 21 में जो पंढरपुर के वकील की कथा है वो नूलकर जी की इस घटना से ही सम्बंधित है। वकील साहेब व अन्य लोगों ने ही नूलकर व बाबा का उपहास किया था कि क्या एक शिक्षित व्यक्ति को इस मार्ग पर चलना चाहिए? (साभार-Ambrosia In Shirdi)

'जिस क्षण तुम शिरडी आओगे, तुम्हारी तकलीफों का अन्त हो जायेगा। यहां का फकीर बहुत दयालु है।' यह बाबा श्री के वचन थे जो उस समय भी ब्रह्मलिखित थे और आज भी हैं। दामोदर रघुनाथ जोशी की सुपुत्री मालनबाई तपेदिक से बुरी तरह पीड़ित थी। फेफड़ों पर इतना असर पड़ा कि न वह बैठ सकती और न करवट बदल सकती। सारे उपचार फेल हो गये थे।

आखरी उपचार मानकर पिता ने उदि देनी शुरू कर दी। अब वह यही रट लगाती शिरडी ले चलो।' यदि मुझे शिरडी नहीं ले जाते, मैं कभी भी ठीक नहीं हो पाऊँगी, उसकी अवस्था को देखते हुए पिता ने डॉक्टरों से सलाह ली। मरीज़ की आखरी इच्छा को देखते हुए पिता उसे लेकर कुछ लोगों के साथ शिरडी गये। जैसे ही बाबा ने उन्हें देखा, उत्तेजित होकर अपशब्द बोलते हुए कहा, 'इसे एक कम्बल पर लेटा दो और मिट्टी के बर्तन में पानी पीने को दो।'

वाड़े में एक सप्ताह ऐसा ही किया गया। प्रात: एक दिन उसने शरीर त्याग दिया। साथ आये लोग अंतिम संस्कार की तैयारी करने लगे। इसी दिन भक्तगण काकड़ आरती के लिये द्वारकामाई में इकट्ठे हुए थे परन्तु बाबा उठने के लिये तैयार न थे। जब वे उठे तो क्रोधित हो फर्श पर कई बार सटका मारा। साथ-साथ वे अपशब्द भी बोल रहे थे, तभी बाबा उठे और क्रोध में ही दीक्षित वाड़े की ओर चल दिये जहां मालनबाई रह रही थी। तभी मालनबाई उठ कर बैठ गई और हैरानी से आसपास देखने लगी। पिता व अन्य सब यह देख आश्चर्य चकित थे। उन्होंने पूछा कि क्या हुआ था? तब जो उसने बताया वो कल्पना से भी परे था, 'मुझे एक बदसूरत व्यक्ति ने पकड़ कर घसीटा और साथ ले जाने लगा। मैंने बाबा को पुकारा। बाबा आये और उस व्यक्ति को मारने लगे। उसने मुझे छोड़ दिया और बाबा मुझे चावड़ी ले आये। जबकि मालन बाई ने अभी तक चावड़ी नहीं देखी थी परन्तु जब चावड़ी के स्वरूप का इस तरह वर्णन किया कि 'बाबा वहां बैठते थे, वहां सोते थे आदि, सब अपने-अपने शब्द खो बैठे। सारा वर्णन पूर्णत: सत्य था। परिवार जन यह लीला देख अति प्रसन्न थे। जिस मरीज़ के जीने में संशय था मात्र बाबा श्री की वाणी से नवजीवन पा गया। बाबा का शुक्रिया अदा करते हुए वे खुशी-खुशी घर लौट गये।

जहां अनन्य भाव से गुरू की पूजा होगी, वहां सांसारिक जीवन के दु:ख और कष्टों का विनाश हो जायेगा (जब सद्गुरू नाव के मालिक हों तब सच्चे और निष्कपट भक्त तीन प्रकार के कष्टों- आधिभौतिक, आध्यात्मिक और आधिदैविक पर विजय प्राप्त कर लेते हैं।

बाबा साई ने अनेक अवसरों पर भक्तों को यह अनुभव दिया कि वे स्वयं प्रभु श्री नारायण के सगुण अवतार हैं। अत: कई बार वे भक्तों के स्वप्न में आकर भक्त का पथ प्रदर्शन करते थे। कई बार जब भक्त उनके करीब जाता तो वे क्रोध में अपशब्द कहते। जो वास्तव में भक्तों की बाधाओं, बिमारियों या दुर्भाग्यों के प्रति होता था। यह एक ऐसी लीला होती, जैसे एक मां अपने बच्चे पर ऊपरी रूप से क्रोध करती है या उसे पीट भी देती है। यह सर्वविदित है कि बाबा शुरू में दवाई देते थे और कोई द्रव्य नहीं लेते थे। इतना ही नहीं, यदि मरीज़ के पास देखभाल हेतु कोई नहीं होता वे स्वयं वहां जाकर उसकी सेवा करते। एक बार उन्होंने सब दवाईयां देनी बंद कर दी और केवल उदि (विभूति) देने लगे। शायद यह भी प्रभु साई की ही एक लीला थी। वर्णन, श्रवण करें...

श्री गणपति शिन्दे जी के कथनानुसार- 'जैसे ही बाबा शिरडी आये, अमीन भाई ने उन्हें खाना दिया। मेरी मौसी का लड़का गणपति हरि कानड़े, आयु 35 वर्ष, कोढ़ से पीड़ित था। अमीन भाई के कहने पर बाबा उनके घर गये। बाबा ने कोबरा के ज़हर से एक दवाई बनाई और खाने को दी। साथ में यौन सुख से परहेज़ करने को कहा। मरीज़ ने बाबा का कहना नहीं माना, फलत: बीमारी बढ़ती गई और गणपति का निधन हो गया। इस घटना के बाद बाबा ने हकीम के रूप में काम बंद कर दिया। पश्चात् जीवन भर मरीज़ों को उदि व अन्य वस्तुओं को उपचार के लिये देते रहे। उदाहरणार्थ- काका महाजनी जी का अतिसार मूंगफली से दूर किया, बाबा गणपत दर्जी का मलेरिया रोग एक काले कुत्ते को दही चावल खिलाने से दूर हुआ। यह बाबा श्री का आदेश था, बूटी साहेब जो हैज़े से पीड़ित थे उन्हें मीठे दूध में उबाला हुआ बादाम, अखरोट और पिस्ते का काढ़ा पीने का आदेश दिया जिसके पीने से वे निरोग हो गये। दूसरा डॉक्टर या हकीम बाबा श्री की बतलाई हुई इस औषधि को प्राण घातक ही समझता। परन्तु यह उपाय भगवान धन्वंतरी श्री साई बाबा ने स्वयं बताया था जिससे रोग समूल रूप से नष्ट हो गया था।

सदेह समय बाबा आरती पश्चात् सब भक्तों को उदि देते हुए प्रेमपूर्वक यही कहते- भाऊ अब तुम घर जाओ, खाना खाओ। बाबा के समय में भी यही उदि रामबाण थी और महान आश्चर्य, दस दशकों बाद भी यह उदि, भगवान धन्वंतरी का आशीर्वाद, आज भी फलीभूत है जो बड़े-बड़े रोगों को दूर कर देता है। भक्त शामा ने बाबा की महासमाधि पश्चात् आयुर्वेद, का कार्य आरम्भ किया। वे दवाई के साथ उदि भी देते जिससे मरीज़ को तत्काल आराम मिल जाता था। बाबा श्री ने अपना कोई शिष्य या मठ या उत्तराधिकारी नहीं बनाया, हां विरासत में धूनी मां को छोड़ा है जो बाबा का एक सगुण स्वरूप है। आइये एक डॉक्टर से इस उदि की महिमा श्रवण करें-

अमरावती के डाक्टर तलवालकर 1917 में प्रथम बार शिरडी आये। पश्चात् वे बाबा के दर्शन हेतु अनेक बार शिरडी गये। बाबा श्री के श्री हाथों से प्राप्त उदि वे बहुत समझदारी से इस्तेमाल करते। उनका व्यवसाय फलफूल रहा था। वे प्रथम बाबा की पूजा करते तब अपने दवाखाने जाते। दूसरे डॉक्टर भी अपने मरीज़ इनके पास भेजते। एक बार ऐसा मरीज़ आया जो मृत्यु-द्वार पर खड़ा था। उन्होंने बाबा के चित्र को देखते हुए कहा, 'बाबा, इस मरीज़ ने सब उपचार किये हैं, अब आप ही इस मरीज़ को बचा सकते हैं।' तभी उन्हें कुछ विचार आया, दवाई की खाली शीशी में पानी भरा और उदि की तीन छोटी पुड़िया बनाई और मरीज़ के सम्बंधि को देते हुए कहा, इस दवाई को दिन में तीन बार लेना है। शाम को मुझे मरीज़ की हालत की जानकारी देना।

रिश्तेदार ने शाम को बताया मरीज़ स्वयं को अच्छा महसूस कर रहा है। तब डॉक्टर ने सामान्य दवाई दी। मरीज़ जल्द ही स्वस्थ हो गया। जब उसने बिल व कुछ और पैसे देने चाहे, डॉक्टर ने मना करते हुए कहा, मैंने तुम्हें नहीं बचाया है, यह तो कोई और है जिनकी तुम पर कृपा हुई है। मैं तो एक यंत्र था। उदि ने ही तुम्हें नवजीवन दिया है, तुम्हे शिरडी अवश्य जाना चाहिए। कुछ समय पश्चात् डॉक्टर व मरीज़ शिरडी गये। वो पूजा व आरती में शामिल हुए। कृतज्ञ मरीज़ ने दान पेटी में भारी दाक्षिणा डाली। तब डॉक्टर ने कहा, 'यह हैं श्री साई बाबा, जिनकी उदि से तुम्हें नया जीवन मिला, मेरी दवाईयों से नहीं, अपितु उदि-तीर्थ व कृपा ने असर किया है। यह अति विशेषनीय बात है- यह लीला 1937 की है जबकि बाबा से उदि उन्हें 1917 में प्राप्त हुई थी।

प्राय: सभी मामलों में बाबा ने हर उस भक्त की इच्छा को पूर्ण किया जो पूर्ण श्रद्धा, प्रेम व विश्वास से उनकी शरण में आये। उनका कथन था-'जो कोई भी शिरडी की पावन भूमि व मेरी मस्जिद में आयेगा उसके समस्त कष्ट, रोग दूर हो जायेंगे। इस मस्जिद का फकीर (धन्वंतरी श्री साई) बहुत दयालु है। यह प्रत्येक साई भक्त का प्रत्यक्ष अनुभव है।

'मैं परवरदिगार (भगवान) हूं। मैं शिरडी में और सब कहीं रहता हूं। मेरी आयु लाखों वर्षों की है, सभी वस्तुएं मेरी हैं और मैं ही सबको हर वस्तु देता हूं।'

मैं अपने भक्तों का दास हूं। जैसे ही एक भक्त मुझे प्रेम से बुलाता है, मैं प्रकट हो जाता हूं। मुझे किसी भी साधन की ज़रूरत नहीं है। -श्री साई

संकलन: **योगराज मनचंदा**
साभार-एमब्रोसिया इन शिरडी

साई मंदिर रोहिणी में हनुमान जयन्ती पर सुंदरकाण्ड का पाठ

दिल्ली: सुप्रसिद्ध शिरडी साई बाबा मंदिर, सैक्टर-7, रोहिणी में दिनांक 23 अप्रैल को श्री हनुमान जयन्ती के पावन अवसर पर दोपहर 3:30 बजे से सुन्दरकांड का पाठ आयोजित किया गया।

त्यौहार पर विशेष कार्यक्रम होते हैं जो बड़ी श्रद्धा और कुशलतापूर्वक आयोजित किये जाते हैं। इन सभी कार्यक्रमों का आयोजन मंदिर समिति के सदस्यों- प्रधान श्री के.एल. महाजन, उपप्रधान श्री संजीव अरोड़ा, महासचिव श्री रमेश कोहली, कोषाध्यक्ष श्री अशोक रेखी, सचिव श्रीमती प्रोमिला मखीजा एवं सदस्य श्री पी.डी. गुप्ता, श्री बी.पी. मखीजा व श्री विमल शर्मा द्वारा किया जाता है।

आचार्य श्रवण जी महाराज ने अपने मधुर स्वर में सुंदरकाण्ड का संगीतमय पाठ किया। वहां उपस्थित भक्तों को सुंदरकाण्ड की पुस्तकें दी गई और सबने साथ-साथ सुन्दरकांड का पाठ किया। सभी ने पाठ का खूब आनन्द लिया। आचार्य श्रवण जी महाराज ने पाठ के दौरान कुछ मनभावन भजन भी सुनाए। मंदिर का पूरा हॉल भक्तों से भरा हुआ था। मंदिर कार्यकारिणी के सदस्य भी कार्यक्रम में मौजूद रहे। अंत में श्री हनुमान जी की आरती व साई बाबा की सायं आरती की गई। सभी भक्तों को लड्डू, फल एवं गुड़ चने का प्रसाद दिया गया। इस मंदिर में हर

हर्ष पटूना द्वारा साई भजनों की धूम

दिल्ली: दिनांक 25 अप्रैल को साई मंदिर लोधी रोड में साई के लाडले हर्ष साई जी ने साई बाबा के श्री चरणों में अपनी हाज़री लगाई। मंदिर में मौजूद साई भक्तों ने उनके भजनों का आनन्द लिया व बाबा का खूब आशीर्वाद मिला। भक्तों ने भी बाबा के भजनों में तालियां बजा-बजा कर उनका साथ दिया।

श्री रणवीर सिंह जी के परिवार द्वारा दिनांक 14 अप्रैल 2024 को अपने निवास स्थान महावीर एन्कलेव पार्ट-1, पालम, दिल्ली में परिवार में पौत्र होने की खुशी में माता की चौकी का आयोजन किया जिसमें दिल्ली के प्रसिद्ध भजन गायक हर्ष साई एंड पार्टी को बुलाया गया। माता का आवाहन और गणेश वंदना महंत श्री महाराज मस्ती द्वारा की गयी। उसके बाद हर्ष साई जी अपने ही अंदाज़ में माता रानी

की भेंटें सुनाकर सभी भक्तों को नाचने पर मज़बूर कर दिया। भक्तों ने खूब आनन्द लिया वा माता रानी का आशीर्वाद लिया। उनके बाद श्री दिनेश दीवान जी ने कुछ भजन सुनाकर सभी को मंत्रमुग्ध कर दिया। अंत में राधा कृष्ण जी और शिव पार्वती की झांकीयों ने सबका मन मोह लिया। इसके बाद माता का भंडारा हुआ। सबने बड़े ही प्रेम से प्रसाद ग्रहण किया। -**जी.आर. नंदा**

साईनाथ मंदिर सरोजनी नगर में नवरात्र

दिल्ली: सरोजनी नगर मार्केट के पास स्थित साईनाथ मंदिर, एच ब्लॉक में नवरात्री महोत्सव पूर्ण श्रद्धा के साथ मनाया गया। इस शुभ अवसर पर नवरात्र के पहले दिन मंदिर में मां दुर्गा की अखण्ड ज्योति प्रज्वलित की गई। भक्तों

ने मैय्या के समक्ष प्रतिदिन पाठ किया। नवमी पर माता के पूजन के साथ नवरात्री उत्सव सम्पन्न हुआ। रामनवमी के पावन अवसर पर भक्तों ने साई सच्चरित्र का पाठ किया और श्रीराम व बाबा का आशीर्वाद लिया। इस अवसर पर भजनों का गुणगान भी किया गया। गायक दयाचन्द ने कई भजन सुनाए। सम्पूर्ण कार्यक्रम मंदिर की संस्थापक श्रीमती प्रीति भाटिया जी के मार्गदर्शन में किया गया। -**राजेन्द्र सचदेवा**

साई मंदिर रोहिणी में रामनवमी पर भजन एवं पालकी

दिल्ली: शिरडी साई बाबा मंदिर, सैक्टर-7, रोहिणी में दिनांक 17 अप्रैल को रामनवमी महोत्सव धूमधाम से मनाया गया। सुबह 9 बजे से दोपहर 12 बजे तक पंडित श्रवण महाराज जी ने भजनों का गुणगान

किया। दोपहर की आरती के बाद 12:30 से 2 बजे तक रश्मि भारद्वाज ने और शाम 5:30 बजे से 7 बजे तक राधा राठौर ने भजन प्रस्तुत किये। 7:30 बजे से रात्रि 10 बजे तक नागर एंड पार्टी द्वारा भजनों का गुणगान मंदिर में किया गया। बहुत से भक्तों ने दिनभर भजनों का आनंद लिया।

शाम को आरती के बाद बाबा की पालकी मंदिर से रोहिणी भ्रमण के लिए धूमधाम से निकाली गई। पालकी में अनेक झांकियां, रथ, ढोल-ताशे, घोड़े की बग्गी, बैंड बाजे और हज़ारों भक्त साई नाम के जयकारे लगाते हुए पालकी के साथ चले। कई जगह पालकी का स्वागत किया गया और प्रसाद भी बांटा गया। शेज आरती के साथ कार्यक्रम का समापन हुआ। हज़ारों भक्तों ने इन कार्यक्रमों में शामिल होकर साई बाबा, मातारानी व श्रीराम का आशीर्वाद प्राप्त किया। कई भक्तों ने मंदिर की यूट्यूब चैनल पर लाईव प्रोग्राम देखा।

इस भक्तिमय कार्यक्रम का आयोजन मंदिर के प्रधान श्री के.एल. महाजन, उपप्रधान श्री संजीव अरोड़ा, महासचिव श्री रमेश कोहली, कोषाध्यक्ष श्री अशोक रेखी, सचिव श्रीमती प्रोमिला मखीजा एवं सदस्य श्री पी.डी. गुप्ता, श्री बी.पी. मखीजा व श्री विमल शर्मा द्वारा किया गया। **-कृष्णा पुरी**

साई धाम मिनी शिरडी सलेमाबाद में रामनवमी उत्सव धूमधाम से सम्पन्न

गाज़ियाबाद: दिनांक 17 अप्रैल 2024 को साई धाम मिनी शिरडी, मुरादनगर, सलेमाबाद, रावली रोड, गाज़ियाबाद में रामनवमी उत्सव हर्षोल्लास के साथ मनाया गया। पूरे मंदिर को रंगबिरंगे फूलों से सजाया

गया। प्रात: 6 बजे भक्तों ने बाबा को मंगलस्नान करवाया। तत्पश्चात् बाबा का अभिषेक हुआ और पूजा अर्चना एवं हवन किया गया। प्रात: 10 बजे मां भगवती का पूजन एवं हवन किया गया जिसमें बहुत से भक्त शामिल हुए। मध्यान्ह आरती के बाद भण्डारे का आयोजन किया गया। दोपहर 3 बजे से मंदिर में भक्तों द्वारा साई नाम जाप किया गया। शाम 6 बजे बाबा की पालकी निकाली गई। पालकी के साथ भक्तगण मशाल लेकर साई नाम के जयकारे लगाते हुए साथ-साथ चले। इस मशाल परिक्रमा में बहुत से भक्त शामिल हुए।

दिनांक 18 अप्रैल गुरूवार को हर वीरवार की तरह होने वाले नियमित कार्यक्रम किये गये। मंदिर में भण्डारे व भजन कीर्तन का आयोजन किया गया। शाम को धूपआरती के बाद बाबा की पालकी निकाली गई। दिन भर मंदिर में भक्तों का मेला लगा रहा। सभी कार्यक्रमों का आयोजन मंदिर के संस्थापक श्री वी. के. शर्मा जी एवं मीनाक्षी शर्मा जी, साई धाम ट्रस्ट एवं श्री साईधाम समिति के सदस्यों द्वारा श्रद्धापूर्वक किया गया। **-ऊषा कोहली**

पवार काका द्वारा 11 वचनों की व्याख्या

ग्यारह वचनों की भाषा अर्थात् बाबा की गूढ़ भाषा। सहजतापूर्वक समझ में न आने वाली बाबा की गूढ़ शब्द रचना है। इन ग्यारह वचनों का सीधा-सादा, सरल शब्दार्थ लिया जाय तो अर्थ का अनर्थ होने की पूरी संभावना है। समय, श्रम तथा धन के अपव्यय का खतरा है। जीवन का सही मर्म समझने का इन चिंतन मालिका द्वारा, हम इन वचनों का निष्कर्ष निकालने का प्रयास करते हुए चिंतन के माध्यम सये, बाबा की इस गूढ़ भाषा का अर्थ आत्मसात करने का प्रयास करने वाले है।

पहला वचन: शिरडी की पावन भूमि पर पांव रखेगा जो भी कोई।
तत्क्षण उसके मिट जाएंगे सभी अपाय हो जो भी कोई।।

आरंभ में ही 'शिरडी में पड़ते जिनके पांव' इन शब्दों की रचना क्यों की गई है? तीर्थक्षेत्र में जाने पर भगवान के चरणों के दर्शन करने का उल्लेख कर उपयुक्त लगता है। भगवान के ही चरण महत्वपूर्ण होते हैं, हमारे नहीं। हम इतने पुण्यवान, भाग्यवान व ज्ञानी नहीं हैं जिससे कि हमारे पांवों से कोई चमत्कार घटित हो जाय। वास्तव में शिरडी क्या है? क्या साई भगवान केवल शिरडी में ही स्थित हैं?

इस समूचे विश्व की माता केवल शिरडी क्षेत्र तक ही सीमित है क्या? अत: सर्वप्रथम शिरडी, इस नाम का मूल अर्थ खोजना अत्यावश्यक है। वास्तव में शिरडी का मूल नाम शिलधी अथवा शीलधी था।

सन् 1320 से 1350 की अवधि में लिखे गए ग्रन्थों में शिरडी का उल्लेख 'धीशीला नगरी' नाम से किया गया है।

धीशीला नगरी का अपभ्रंश के रूप में प्रयोग आगे चल कर शीलधी, शिलधि, शिरडी, शिर्डी इस प्रकार होता गया। उपरोक्त दोनों अर्थों को ध्यान में लेने पर शिरडी के नाम में शील, संग्रह तथा बुद्धि ये तीन मूल घटक ध्यान में आते हैं। जो शीलवान है, जिनकी बुद्धि स्थिर है, आत्मनाआत्म विवेक जागृत है और जो शील का संग्रह है, वही शिरडी के मार्ग पर चलने का अधिकारी है। भक्तों को भगवान की ओर लेकर जाने का महामार्ग साईनाथ की शिरडी है।

साई भक्तों की यह अग्रिम उपाधि है।

'पड़ते जिनके पांव' अर्थात् पांव लगना, उस मार्ग पर चलना, शिरडी की ओर मार्गक्रमण करना, इस उक्ति का यह अर्थ नहीं है कि दो दिन के कपड़े साथ लेकर किसी प्रकार शिरडी की ओर भागते रहना।

कोई भी व्यक्ति शिरडी जाए और वहां की भूमि पर पांव रखते ही उसके समस्त कष्ट दूर हो जाएं, इतना सीधा सरल अर्थ इस वचन का नहीं है। भगवान इतने सस्ते तथा सहजप्राप्य नहीं हैं। शिरडी के मार्ग पर मार्गक्रमण करने की योग्यता पहले ग्रहण करनी पड़ती है। शिरडी में केवल इस देह को लेकर जाने पर व्याधियां टल गई होती तो आज समस्त विश्व के कोने-कोने से अनेक वाहनों द्वारा प्रतिदिन लाखों लोग शिरडी आते हैं, इसके अतिरिक्त दो व्यक्ति तो विशेषरूप से आते ही रहते हैं, एक चालक और दूसरा वाहक। बिना भूले ये दोनों शिरडी प्रतिदिन आते ही रहते हैं, तो क्या इनकी सारी व्याधियां टल जाती हैं? अन्य सभी प्रकार के लोग अक्सर आते रहते हैं, क्या उन सबकी व्याधियां टल जाती हैं? ऐसा नहीं है। इसके गूढ़ अर्थ को आत्मसात करने की आवश्यकता है।

अपराधी तीरथ चले क्या तीरथ तारे?
काम क्रोध मद न मिटा क्या देह पखारे?

साई सच्चरित्र के तेरहवें अध्याय की ग्यारहवीं ओवि का संदर्भ यहां प्रस्तुत करना अति उपयुक्त प्रतीत हो रहा है। बाबा कहते हैं-

'पाप विलीन हुए जिनके। जो पुण्यात्मा ऐसे।
वे ही मेरे भजन करते। पहचान पा गए वे मेरी'

उपजाऊ भूमि में ही अच्छी फसल उगती है, बंजर भूमि में नहीं। जिसका चरित्र शुद्ध है, जो शील का आशय व संग्रह स्थान है, उसी के पांव शिरडी की ओर मुड़ते हैं।

साई भगवान की भक्ति करने की तीव्र लालसा तथा कामना होना अर्थात् शिरडी में पांव पड़ना व शिरडी के राजमार्ग पर मार्गक्रमण करना। वास्तव में शिरडी कहां है, यह प्रश्न करना चाहिए व इसका उत्तर ढूंढना चाहिए। बाबा ने साई सच्चरित्र में इसका उत्तर दिया है-

यह सच्चरित्र मार्ग सरल सपाट।
जहां-जहां इसका पाठ
वहीं बसे द्वारकामाई का मठ।
होते प्रकट साई भी वहां।
वहीं गोदावरी का तट।
वहीं शिरडी क्षेत्र निकट।
वहीं साई धूनी सन्निकट।
स्मरण करते ही संकट निवारते।

'साईसच्चरित्र' यह एक उपासना व आराधना है और जहां साई सच्चरित्र का पाठ होता रहता है, वहीं द्वारकामाई का मठ अर्थात् शिरडी है तथा साई भगवान वहां निश्चित रूप से प्रकट होते हैं। वहीं गोदावरी का तट, वहीं शिरडी क्षेत्र है और वहां साई भगवान का स्मरण करने मात्र से ही सभी संकटों का निवारण हो जाता है। इसे ही 'टल जाती व्याधियां सारी उनकी' कहा गया है।

यहां 'टल जाती हैं व्याधियां सारी उनकी' ऐसा उल्लिखित है, अर्थात भगवान श्री साईनाथ की कृपा से समस्त व्याधियां टल जाती हैं। बाबा सभी कष्टों व संकटों का हरण कर लेते हैं। सुभक्त की समस्त पीड़ाओं को हर लेते हैं। अब प्रश्न यह उत्पन्न होता हैं कि यदि व्यक्ति कृपा के योग्य न हो तो? शिरडी के मार्ग पर क्रमण करना अर्थात बाबा की शिक्षाओं पर चलकर, योग्यता प्राप्त कर, शुद्ध हो जाना है। चरित्रवान, शीलवान, मुमुक्षु जीवों की मुक्ति यात्रा, उनके अपने ही पांवों से शिरडी से आरम्भ होती है। वह बाबा के दिखाए मार्ग पर चलकर, गुरूभक्ति करते हुए, अपने जीवन को सरल व शुद्ध बनाकर सदैव के लिए सुखी हो जाते हैं।

-पवार काका

आभार: भवानुवाद श्री साईसच्चरित्र भाग-2

बाबा की बच्ची हरलीन सुखीजा

शिरडी: हाल ही में बाबा की नन्हीं बच्ची हरलीन सुखीजा ने शिरडी यात्रा की और अपनी इस यात्रा के दौरान बेबी हरलीन ने शिरडी में गेट-3 के बाहर समाधि शताब्दी मंडप पर अपनी मधुर

आवाज में भजनों का गुणगान किया। सभी भक्त नन्हीं बच्ची को भजन गाते देख बहुत प्रभावित हुए और सबने उसके गाये भजनों का आनन्द लिया। बाबा के परम भक्त श्री सुरेश सुखीजा जी की पोती हरलीन बचपन से ही बाबा की दीवानी है और उसे साई भक्ति विरासत में मिली है। -गायत्री सिंह

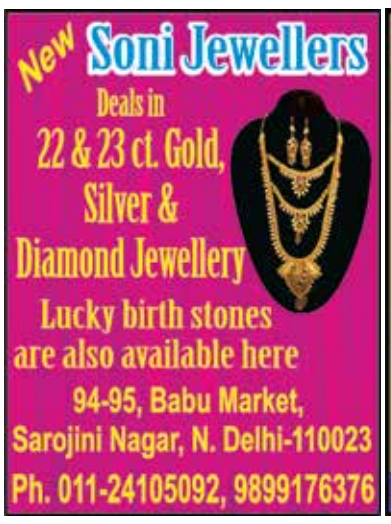

श्री राधाकृष्ण मन्दिर सैनी एन्कलेव में पालकी एवं रामनवमी महोत्सव

दिल्ली: दिनांक 21 अप्रैल 2024 को श्री रामनवमी महोत्सव के उपलक्ष्य में श्री राधाकृष्ण मन्दिर, सैनी एन्कलेव, दिल्ली में साई बाबा की पालकी एवं झांकियां निकाली गई। पालकी यात्रा श्री राधा कृष्ण मंदिर से चलकर सैनी एन्कलेव एवं

श्याम एन्कलेव की परिक्रमा करने के पश्चात् पुन: श्री राधा कृष्ण मन्दिर में सांय 7:30 बजे पहुंची। जहां-जहां से पालकी गुज़री वहां का सारा वातावरण भक्तिमय बन गया। शेज आरती के पश्चात् सभी भक्तों ने स्वादिष्ट भंडारे का आनन्द लिया।

श्री अनिल अरोड़ा जी ने बताया कि मन्दिर में प्रतिदन काकड़ आरती धूप आरती एवं शेज आरती होती है तथा हर वीरवार को दूध से बाबा का मंगलस्नान करवाया जाता है। सभी भक्तों ने श्री राधाकृष्ण मन्दिर के प्रधान श्री सेवा राम सैनी एवं सचिव श्री सुरेन्द्र सैनी जी का आभार प्रकट किया।

-ओ.पी. कपूर

बाबा ने मेरी मां को बृहस्पतिवार के दिन मोक्ष प्रदान दिया

मेरा नाम बलराम गुप्ता है, मैं बक्सर बिहार का रहने वाला हूं। मैं पिछले 23 सालों से बाबा के चरणों से जुड़ा हूं। श्री साई सुमिरन टाइम्स का पठन में नित्य रूप से करता हूं। ये समाचार पत्र जिसकी संपादक साई सेविका अंजु टंडन जी हैं, मेरे लिए तो अब एक ग्रंथ स्वरूप हो गया है। मेरे साथ हर रोज़ छोटे बड़े साई कृपा के अनुभव होते रहते हैं। उन्हीं में से साई का एक चमत्कार मैं आप सभी भक्तों के सामने सांझा कर रहा हूं।

मेरे पिताजी का देहांत 1998 में हृदयघात से हो गया। उनके मरणोपरांत माता जी का दायित्व मेरे कंधे पर आ गया। तब मेरी शादी भी नहीं हुई थी। तब मेरी आयु मात्र 24 साल थी। तब मेरी नौकरी को मात्र 4 साल ही हुए थे। साल 2000 में मेरी शादी हो गयी। केंद्र सरकार की नौकरी के कारण मेरा चंडीगढ़, गुवाहाटी, मुंबई, नाशिक, दिल्ली, तमिलनाडू फिर से दिल्ली में तबादला होता चला गया। इन गुज़रे 20 सालों में माताजी मेरे ही साथ मेरे सरकारी एवं किराए के घर में रहती थी। जब जब मेरा तबादला होता था तब-तब मुझे साल भर के लिए किराए के मकान में रहना होता था। फिर लगभग एक साल बाद मुझे सरकारी घर में शिफ्ट होना होता था। घर शिफ्टिगं में बहोत सारी दिक्कतों एवं संघर्ष का सामना होता था। हर 3-4 साल बाद शिफ्टिंग करना मजबूरी थी। माता जी के अंतिम दिनों में जब उनकी आयु लगभग 90 साल की हो गयी थी तब उनको उच्च रक्तचाप, गठिया एवं अन्य उम्रदराज बीमारियां हो गयी थी, जिसके कारण उनके दवा एवं स्वास्थ्य का बहुत ख्याल रखना होता था। दवा का नाम उनको नहीं पता था। कुल 8 तरह की दवाई वो रोज़ाना खाती थी। हर दवा को वो कलर कोड से पहचानती थी। अब अगर मार्किट में दूसरे कलर की दवा उस ब्रांड में आ गयी तो उन्हें समझाने में भारी समस्या का सामना करना होता था। एक बात ज़रूर थी कि मेरी पत्नी सुधा रानी गुप्ता उनकी सेवा बिलकुल नि:स्वार्थ भावना से करती थी और कोई भी कसर नहीं रखती थी। इस हालत में माता जी के साथ पोस्टिंग ट्रांसफर के समय में भी दिक्कत होती थी। माता जी की वृद्धा अवस्था एवं भारी वज़न के कारण उनसे चला ही नहीं जाता था। रेलवे स्टेशन/एयर पोर्ट/ बस स्टैंड पर व्हील चेयर की आवश्यकता होती थी। समस्या तब बहुत ज़्यादा हो जाती जब व्हील चेयर नहीं मिलता था। मेरे पास उतना सामर्थ्य नहीं था कि मैं हर बार हवाई जहाज़ की यात्रा कर सकता। साल में दो-तीन बार मुझे अपने घर बक्सर, बिहार आना होता था।

बात सिम्बर 2019 की है तब मैं दोबारा से दिल्ली में पोस्टिंग पर आ चुका था। दिल्ली में पालम के पास महावीर एन्कलेव पार्ट-3 में मैं किराए के मकान में रहता था। माता जी की तबीयत अचानक खराब हो गयी। डायरिया एवं दस्त के कारण उनको दिल्ली कैंट हॉस्पिटल में एडमिट किया गया। अब हालत ये था कि हॉस्पिटल में बेड पर ही दैनिक दिनचर्या करना होता था। हॉस्पिटल से डिस्चार्ज करवा कर घर लाये तो अब उनकी हालत दिन प्रतिदिन बदतर होने लगी। बिछावन पर ही माता जी का दैनिक दिनचर्या होने लगा। मेरी पत्नी सुधा उनको डायपर पैड अब हर वक्त लगा कर रखती थी। तब दिसम्बर का महिना था और दिल्ली में उस साल रिकॉर्ड वाली भयंकर ठंड थी। 22 दिसम्बर 2019 की बात है। मेरे किराए के घर में प्रवेश द्वार के सामने साईबाबा का फोटो लगा था। मैं हर रोज़ बाबा की उस तस्वीर के सामने उनके फोटो को टकटकी लगा कर देखता था तथा विनती करता कि हे मेरे साई बाबा, मेरी मां की आयु अब 90 वर्ष हो चुकी है उन्होंने अपना जीवन खूब जी लिया है अब उनको घोर शारीरिक कष्ट हो रहा है। अत: उन्हें मुक्ति दे दो मेरे बाबा। बात 25 दिसम्बर की है, मेरी मां की तबीयत बिल्कुल सुस्त हो गयी थी। घर में उन्होंने खाना पीना लगभग बंद कर दिया था। हमने अपने भाई बहन सबको फोन कर दिया कि मां की तबीयत बहुत खराब हो गयी है, आप लोग जल्दी से दिल्ली आ जाओ। हमें समझ नहीं आ रहा था कि अब आगे करना क्या है। मैं और मेरी पत्नी बहुत घबराये हुए थे। मैं बाबा से यही प्रार्थना करता था कि हे बाबा जी हमें इस समस्या से उबारो। आगे का मार्ग प्रशस्त करो। मेरे बाबा ने हमारी प्रार्थना सुन ली। 26 दिसम्बर के दिन माता जी ने हम दोनों पति पत्नी को सुबह में अपने कमरे में बुलाकर सिर पर हाथ रखकर आशीर्वाद दिया और उसके बाद बिल्कुल सुस्त हो गयी। दोपहर में हम लोग उनको एम्बयुलेन्स द्वारा फटाफट दिल्ली कैंट हॉस्पिटल इलाज के लिए ले गए। 2-3 डॉक्टर एवं नर्स की टीम ने तमाम मेडिकल जांच के बाद जवाब दे दिया। कुछ ही घंटों के बाद साई बाबा ने उसी दिन अर्थात साईवार को माता जी को मोक्ष प्रदान किया। ये बाबा की ही लीला थी कि मेरी मां साईवार के दिन ही बाबा के चरणों में लीन हो गयी। मैं दया के सागर एवं करूणामई, कृपाधन सिंधु श्री साई बाबा को दंडवत प्रणाम करता हूं।

-बलराम गुप्ता, बक्सर बिहार

गुरू मंत्र का महत्व: श्रद्धा और सबुरी

बाबा विश्व गुरू हैं। 15 अक्टूबर 1918 को शिरडी की पावन धरती पर उन्होंने अपनी देह त्याग दिया अपितु फिर भी अपने भक्तों के लिए वो सदैव जीवित ही रहेंगे। उन्होंने विश्व को श्रद्धा और सबूरी का बहुत ही महत्वपूर्ण मंत्र दिया। जीवन में जो कुछ होता है मानव को जो सुख-दुख मिलता है इसमें विधि की कोई योजना होती है। मानव अल्पज्ञ है वो भविष्य को नहीं जानता है। इसलिए जो कुछ होता है भले के लिए होता है ऐसा मानकर सुख-दुख दोनों को भोगना चाहिए। विधाता दुख शिक्षा के लिए देता है और सुख मानवता की परीक्षा के लिए। श्रद्धा और सबूरी ये दो इतने ताकतवर शब्द हैं कि अगर हम इन दोनों शब्दों को अपनी ज़िंदगी में आत्मसात कर लें तो हमारी नैया भवसागर के पार लग जाएगी। परंतु यह कहने में मुझे कोई अतिश्योक्ति नहीं होगी कि हम लोग बहुधा इन दो गूढ़ शब्दों का रहस्य जल्दी नहीं समझ पाते हैं। सदा सुखी कौन है? जिसको भगवान की कृपा पर भरोसा है। अर्थात जिसकी ईश्वर में श्रद्धा है और उनके न्याय पर विश्वास है। जिसके पास सबुरी है। उसको संसार की कोई भी स्थिति विचलित नहीं कर सकती है। ईश्वर तो मेरे बिना भी ईश्वर है परंतु मैं ईश्वर के बिना कुछ भी नहीं हूं। ये बात बिल्कुल सही है कि जब मन व्यथित और उद्विग्न हो तो ईश्वर में श्रद्धा रखना और सबुरी बनाए रखना बेहद कठिन हो जाता है। यदि हम श्रद्धा और सबुरी इन दो शब्दों को अपनी ज़िंदगी का मूल मंत्र बना लें और उस पर अनुसरण करें तो हमारी ज़िंदगी का मार्ग निकंटक हो जाएगा और बाबा की कृपा से हम भवसागर पार कर लेंगे। श्रद्धा और सबूरी ये ईश्वर के वो अमृत शब्द हैं जो हमें ये पाठ पढ़ाते हैं कि संघर्ष करते हुए हमें नहीं घबराना चाहिए। क्योंकि संघर्ष के दौरान ही इंसान अकेला होता है। सफलता के बाद तो सारी दुनिया साथ होती है। वक्त हमें क्या कुछ नहीं सिखाता है। वक्त से हारा या जीता नहीं जाता है केवल सीखा जाता है। ये बात तय है कि यदि श्रद्धा और सबूरी इन दो शब्दों को हमने आत्मसात कर लिया तो यूं समझ लीजिये की ज़िंदगी में हमारी कभी हार नहीं हो सकती। आज के माहौल में हर किसी को जल्दी है। सबको तुंरत रिज़ल्ट चाहिए। किसी के पास इंतज़ार करने का बिल्कुल वक्त नहीं है। सबको चमत्कार चाहिए। इंसान ये भूल जाता है कि हर चीज़ का इक वक्त होता है। माली भले ही 100 घड़े से बीज को सींचे परंतु बीज तो तभी अंकुरित होंगे जब ऋतु आएगा। टेक्नोलाजी चाहे कितना ही एडवांस क्यूं न हो परंतु मां के कोख में बच्चे का सृजन 9 महीने तक ही होता है ये कुदरत की ही टेक्नोलॉजी है। श्रद्धा शब्द जहां ईश्वर में भक्ति एवं दृढ़ता बनाए रखने का ज्ञान देता है वही सबूरी शब्द हमें ये सिखाता है कि जीवन में परेशानी आने पर बेचैन होने की बजाय शांत रहकर विचार करें तो परेशानी का हल ज़रूर निकलेगा। अगर मन उद्विग्न हो और चारों ओर अंधकार हो तो बस शांत रहें और उचित समय का इंतज़ार कीजिये। बाबा आपकी प्रार्थना ज़रूर सुनेंगे। श्रद्धा और सबूरी हमें विनम्रता से बोलना, एक दूसरे का आदर करना, माफी मांगना और शुक्रिया अदा करना भी सिखाते हैं। श्रद्धा और सबूरी ये दो गूढ़ शब्द हमें ज़िंदगी में ये पाठ भी पढ़ाते हैं कि चाहे जो भी हो हमें उदास नहीं होना है, निराश नहीं होना है, ज़िंदगी एक संघर्ष है चलती रहेगी बस हमें ईश्वर में दृढ़ता बनाए रखने की ज़रूरत है। सबूरी के लिए इंद्रियों को नियंत्रण में रखना बहुत ज़रूरी है अन्यथा हमारा मन भटकने लगता है। मन बहुत चंचल होता है। अत: मन को नियंत्रण करने के लिए इंद्रियों पर नियंत्रण बहुत ज़रूरी है। साई बाबा अपने भक्तों से कहते हैं चिंता फिक्र छोड़ दो, मैं तुम्हारी तरफ देख रहा हूं भविष्य के लिए क्या सोच रहे हो ,मैं तुम्हारे सुंदर भविष्य के लिए ही सोच रहा हूं। मुझे बस तस्वीर न जान, श्रद्धा भाव से देखो, मैं तुम्हारी हर मनोकामना पूरी करूंगा अपनी समस्या को यथास्थिति में छोड़ कर अपने मन को मेरी तरफ करो, श्रद्धा और सबूरी के भाव से मेरी तरफ देखो, जब मन शांत होगा ध्यान एकाग्र होगा तब मैं तुम्हारे मन को नई दिशा प्रदान करूंगा। अंत में यह कहने में कोई अतिश्योक्ति नहीं होगी कि यदि आपने इन दो शब्दों को अपने जीवन में आत्मसात कर लिया तो आपके जीवन का हर कठिन वक्त निकल जाएगा।

-साई सेवक बलराम गुप्ता

साई धाम मिनी शिरडी मुरादनगर में कैंसर एवं स्वास्थ्य जांच शिविर

गाज़ियाबाद: दिनांक 11 अप्रैल 2024 को साई धाम, मिनी शिरडी मुरादनगर, सलेमाबाद, रावली रोड, गाज़ियाबाद में श्री जगन्नाथ चैरिटेबल कैंसर अस्पताल, मेरठ रोड, दुहाई, गाज़ियाबाद के अनुभवी डॉक्टरों द्वारा नि:शुल्क कैंसर एवं स्वास्थ्य द्वारा जांच शिविर का आयोजन किया गया। जांच शिविर प्रात: 10 बजे से दोपहर 2 बजे तक चला। इस शिविर में बहुत से लोगों ने आकर नि:शुल्क सुविधाऐं जैसे कैंसर स्क्रीनिंग, जनरल स्क्रीनिंग, स्त्री रोग जांच का लाभ लिया। शिविर

में ज़रूरतमंद लोगों को यथासंभव दवाईयां भी नि:शुल्क दी गई। बहुत से मरीज़ों ने इस शिविर में आकर स्वास्थ्य लाभ उठाया। कार्यक्रम का आयोजन साई धाम के संस्थापक श्री वी.के. शर्मा जी व श्रीमती मीनाक्षी शर्मा जी द्वारा साई धाम ट्रस्ट के सभी सदस्यों के सहयोग से किया गया।

-उषा कोहली

साई धाम हौज़खास में श्री हनुमान जयन्ती महोत्सव

दिल्ली: हर वर्ष की भांति इस वर्ष भी चैत्र मास के आरंभ से ही साई धाम, हौज़खास में उत्सवों की धूम रही। नवरात्र, श्री रामनवमी, बैसाखी एवं हनुमान जन्ममहोत्सव के शुभ आयोजनों से संपूर्ण मन्दिर का वातावरण दिव्य ऊर्जाओं से परिपूर्ण रहा। मुख्य ट्रस्टी आदरणीय श्री नरेन्द्र मिश्रा जी के कुशल नेतृत्व में सभी पुजारीयों, सेवादारों एवं साई धाम के सभी भक्तों ने मिलकर समस्त उत्सव-त्यौहारों को बड़े ही उत्साह से मनाया। अन्य सिद्ध स्थलों की तरह यहां पर भी श्री साई बाबा अपने भक्तों पर अपार स्नेह तथा असीम करूणा बरसाते हैं। भक्तगण भी श्री बाबा जी के सौम्य एवं दिव्य स्वरूप को निहार खुद को भाग्यशाली समझते हैं।

बाबा जी भी सभी भक्तों को मनोवांछित फल प्रदान कर सदैव ही सबके मनोरथ पूरे करते हैं।

-कौशल पंडित जी

शिरडी साई बाबा मंदिर कोलार भोपाल में रामनवमी महोत्सव

भोपाल: साई बाबा मंदिर, शिरडी पुरम, कोलार रोड में 44वां श्री रामनवमी महोत्सव मनाया गया। इ अवसर पर साई बाबा की शोभायात्रा का आयोजन किया गया। दिनांक 16 अप्रैल को प्रात: 11 बजे श्री महावीर म्यूज़िकल ग्रुप द्वारा अखण्ड रामायण पाठ किया गया जो 17 अप्रैल को श्री राम जन्म के साथ सम्पन्न हुआ। दोपहर 1 बजे हवन पूजन किया गया। श्री साई बाबा की पालकी सांय 4 बजे मंदिर प्रांगण से निकाली गई जो मंदाकिनी चौराहा, कोलार मेन रोड से होती हुई पुन: मंदिर में पहुंची। पालकी के साथ-साथ श्रद्धालुगण नाचते गाते हुए चले। सैंकड़ों की तादात में भक्त शोभायात्रा में शामिल हुए। सांय 6 बजे विशाल भंडारे का आयोजन किया गया। सांय 8 बजे साई सुमिरन ग्रुप के कलाकारों द्वारा भजनों का गुणगान किया गया। रात्रि 9 बजे पंडित रामचन्द्र शर्मा जी द्वारा 108 दीपों से नृत्य आरती की गई जो बहुत आकर्षक लग रही थी।

कार्यक्रम का आयोजन मंदिर के संस्थापक परम पूज्य श्री हरीश बाबा के मार्ग दर्शन में मंदिर के सदस्यों द्वारा किया गया।

-रमेश बागड़े

करगीरोड में रामनवमी महोत्सव

करगीरोड: रामनवमी के पावन अवसर पर श्री साई बाबा सेवा आश्रम शिरडी धाम, करगीरोड, कोटा, बिलासपुर छत्तीसगढ़ में सुबह काकड़ आरती के बाद श्री साई बाबा का दूध और गंगाजल

से मंगलस्नान कराया गया। उसके बाद महाअभिषेक व पूजा अर्चना की गई। सभी भक्तों ने प्रात: 9 बजे से श्री साई सच्चरित्र का परायण किया। तत्पश्चात् भगवान सत्यनारायण जी की कथा व राम का जन्मोत्सव मनाया गया। दोपहर 1 बजे बाबा को भोग लगाकर हज़ारों भक्तों को भण्डारा प्रसाद खिलाया गया। 2 बजे भक्तों ने साई महिमन स्तोत्र का पाठ किया। साई कथा व भजनों का गुणगान शाम 3 बजे तक चलता रहा। शाम 6 बजे बाबा की भव्य पालकी शोभायात्रा ढोल नगाड़ों व भव्य झांकीयों के साथ नगर भ्रमण हेतु निकाली गई। जगह-जगह फल व शर्बत का प्रसाद बांटा गया और पालकी का स्वागत किया गया। हज़ारों की संख्या में भक्तों ने बाबा की पालकी यात्रा में शामिल होकर बाबा का आशीर्वाद प्राप्त किया। इस आयोजन को सफल बनाने के लिए साई धाम के सभी सदस्यों व भक्तों का सहयोग रहा।

साई धाम के पुजारी जी ने बताया कि

ये मंदिर 1972 में स्थापित हुआ और यहां पर का बाबा की अखंड ज्योत व अखंड धूनी आज भी निरंतर प्रज्वलित है।

-संचालक कैलाश चंद्र गुप्ता

साई धाम में सामूहिक विवाह समारोह

फरीदाबाद: दिनांक 21 अप्रैल 2024 को साई धाम, तिगांव रोड, फरीदाबाद द्वारा आयोजित सामूहिक विवाह में 25 जोड़ों को परिणय सूत्र में बांधा गया। इस कार्यक्रम में मुख्य अतिथि हरियाणा शिक्षा मंत्री सीमा त्रिखा, फरीदाबाद ज़िला शिक्षा अधिकारी आशा दहिया और रोटरी क्लब दिल्ली साउथ सेंट्रल के मुकेश अग्रवाल का स्वागत अंगवस्त्र पहना कर किया गया। शिरडी साई बाबा स्कूल नि:शुल्क उत्तम शिक्षा के साथ-साथ नि:शुल्क भोजन, स्टेशनरी व यूनिफार्म देने के लिए जाना जाता है। इस विद्यालय में सभी आधुनिक सुविधाएँ उपलब्ध हैं। साई धाम स्कूल के बच्चों द्वारा

प्रस्तुत रंगारंग सांकृतिक कार्यकमों ने सभी का मन मोह लिया। मुख्य अतिथि सीमा त्रिखा जी ने साई धाम द्वारा आयोजित सामूहिक विवाह और इनके द्वारा किये जा रहे सामाजिक कार्यों की प्रशंसा की। आशा दहिया जी ने सराहना करते हुए कहा कि डा. मोतीलाल गुप्ता (संस्थापक अध्यक्ष, साई धाम) का जीवन हम सब के लिए प्रेरणा स्रोत है। साई धाम जिस प्रकार वंचित बच्चों को नि:शुल्क उत्तम शिक्षा दे रहा है, उससे इन बच्चों का जीवन परिवर्तन हो रहा है। साई धाम के संस्थापक अध्यक्ष, डॉ. मोतीलाल गुप्ता जी ने नवविवाहित जोड़ों को आशीर्वाद देते हुए कहा कि हमें सामू. हिक विवाह को प्रोत्साहित करना चाहिए ताकि दहेज प्रथा जैसी बुराईयों को रोका जा सके। संस्था द्वारा विवाह के बंधन में बंधे 25 जोड़ों को घर-गृहस्थी के लिए हर प्रकार का घरेलू सामान जैसे सिलाई मशीन, गैस चूल्हा, बर्तन, कपड़े, बिस्तर, फोल्डिंग बैड इत्यादि दिया गया। सभी दूल्हा-दुल्हनों के परिजनों ने साई धाम के इस आयोजन की हृदय से प्रशंसा की। रोटरी क्लब ऑफ दिल्ली साउथ सेंट्रल से मुकेश अग्रवाल (शिवालिक वाले) ने 25 शादियों को स्पॉन्सर किया। मन्जू भाटिया, साई सहारा समिति, ऑल इंडिया वुमेन काउंसिल और संजय अग्रवाल ने इस मंगल कार्यक्रम में बढ़-चढ़ कर सहयोग किया। इस कार्यक्रम में साई धाम के जय नारायण अग्रवाल, स्नेहलता अग्रवाल, प्रदीप सिंघल, नीलम सिंघल, संदीप सिंघल, कविता सिंघल, दिनेश जैन, डॉ सुमित वर्मा, विजय गुप्ता, अमित आर्या, प्रेम पसरिजा, सुधीर आर्या, धीरेन्द्र श्रीवास्तव, ईशा गुप्ता, सी.के. मिश्रा, रश्मी मिश्रा, यू.एस. अग्रवाल, रतन मुंशी, जे.आर. ग्रोवर, मुनिराज, नरेन्द्र जैन, सुधीर मेहता, बी.एस. जैन, दीपक कपिल, संदीप चौधरी, वी.के. गुप्ता, सुषमा गुप्ता, ओ. पी. गर्ग, विनिता, मुस्कान, पलक व कई गणमान्य व्यक्ति सम्मलित हुए। कार्यक्रम का संचालन आज़ाद शिवम दीक्षित ने बखूबी किया। शिरडी साई बाबा स्कूल की प्रधानाचार्या बीनू शर्मा ने सभी अतिथियों का धन्यवाद किया एवं नवविवाहित जोड़ों को शुभकामनाएं दी। **-के.ए. पिल्ले**

जबलपुर में बाबा की पालकी

जबलपुर: दिनांक 17 अप्रैल 2024 को सच्चिदानंद सद्गुरू साईनाथ महाराज समिति द्वारा साई बाबा की शोभायात्रा शाम 6 बजे नगर निगम चौक से निकाली गई। 27वें वर्ष में प्रवेश कर रही साई शोभायात्रा का नगर निगम चौक से मुख्य अतिथियों, शिरडी से प्रवीण महामुनी व श्री धर्माधिकारी के साथ महापौर जगत बहादुर सिंह अन्नू, अध्यक्ष चन्द्रशेखर दवे, मृगेन्द्र नारायण सिंह, दुर्गेश

शाह संयोजक, राजेश उपाध्याय, सुधीर भटीजा, सुनील खम्परिया, मनोज काशिव, प्रदीव पटेल ने पालकी शोभायात्रा का शुभारंभ किया। सभी भक्तों के सिर पर एक सी पगड़ी, पीताम्बर वस्त्र, विभिन्न झांकियां, बैंड-बाजे आदि ने पूरे वातावरण को साईमय बना दिया। हज़ारों भक्तों ने इस पालकी में शामिल होकर बाबा का आशीर्वाद प्राप्त किया। **-चन्द्रशेखर दवे**

बिलीमोरा में बाबा की निकली पालकी

गुजरात: गुजरात के बिलीमोरा से साई सेवक फ्रेंड्स ग्रुप के द्व रा रामनवमी के शुभ अवसर पर बाबा की पालकी बड़ी धूमधाम से निकाली गई। इस पालकी यात्रा मे बड़ी संख्या में लोग शामिल हुए। बाबा की पालकी सुबह 9 बजे आरंभ हुई। पालकी यात्रा मे बड़ी संख्या में लोगों ने पालकी के दर्शन किए और बड़ी

महा आरती करके पालकी को वापस ले जाते हैं, और बड़ी बात ये है कि इसी पालकी को दिपावली पर कई भक्त पैदल चल कर शिरडी भी लेकर जाते हैं। इस पदयात्रा संख्या में लोग जुड़े, और दर्शन का लाभ लिया। ये पालकी यात्रा लगभग 15 साल से निकाली जा रही है। पालकी को शहर में लोगों को दर्शन करवाते हुए देसरा गांव मे वर्षों पुराने राम मंदिर में लेकर जाते हैं और वहां मंदिर मे कौशल्या नंदन राम लला की में भी बड़ी संख्या में बिलीमोरा से साई भक्त जाते हैं। ये सब आयोजन साई भक्त केतन भाई पांचाल, परेश भाई आहीर, भरत भाई जड़े और मुकेश भाई टनडेल करते हैं, और बाबा की सेवा में हमेशा संलग्न रहते हैं। **-परेश पटेल**

प्राचीन साई धाम मंदिर देव नगर में त्यौहारों की धूम

दिल्ली: प्राचीन साई धाम मंदिर, देव नगर में अप्रैल में गणगौर पर्व, रामनवमी व हनुमान जयन्ती का पर्व हर्षोल्लास के साथ मनाया गया।

दिनांक 7 अप्रैल 2024 को साई मंदिर की महिला सदस्यों के द्वारा गणगौर पर्व मनाया गया। इस पर्व में शिव पार्वती की पूजा की गई। जिन भक्तों के घर गणगौर की मूर्ति थी वे सब अपनी गणगौर को लेकर मंदिर में आए। इस पर्व का मुख्य आयोजन मंदिर की महिला सदस्यों एवं अंजना काढेल एवं उनके परिवार के सदस्यों द्वारा किया गया। मंदिर को गुब्बारों से सजाया गया। इस कार्यक्रम में सभी सदस्यों ने भजन व राजस्थानी गीत गाए और मस्ती में नृत्य भी किया। सभी महिलाओं ने इसका आनन्द लिया। दोपहर के बाद पूरे उत्साह से गणगौर की पालकी निकाली गई जो मंदिर के प्रांगण से होती हुई रामजस गोल चक्कर तक गई और वापस मंदिर में आई। इसके पश्चात् सभी भक्तों को कोल्ड ड्रिंक और प्रसाद का वितरण किया। सभी महिलाओं ने गुलाबी रंग के लहंगे व साड़ीयां पहनी हुई थी। इस अवसर पर सभी सदस्यों ने बाबा एवं गणगौर माता का आशीर्वाद लिया।

दिनांक 17 अप्रैल 2024 को मंदिर में रामनवमी का पर्व बड़ी धूमधाम से मनाया गया। प्रात:काल महिला सदस्यों द्वारा मंदिर के छोटे बाबा को स्नान तथा अभिषेक करवाया गया। पंडित राम मनोहर जी ने मंदिर में विराजित बाबा को स्नान व अभिषेक करवाया, उसके बाद आरती की गई। सभी को हलवा व बिस्कुट का प्रसाद बांटा गया। मंदिर में कन्या पूजन भी किया गया। कन्याओं को हलवा, छोले पूरी का प्रसाद तथा दक्षिणा दी गई।

दिनांक 23 अप्रैल 2024 को हनुमान जयन्ती के उपलक्ष्य में मंदिर में महिला

सदस्यों द्वारा सुन्दरकांड और हनुमान चालीसा का पाठ किया गया जिसमें बड़ी संख्या में भक्तगण उपस्थित रहे। उसके बाद मंदिर में प्रति माह किया जाने वाला साई सच्चरित्र का पाठ किया गया। अंत में सबको प्रसाद बांटा गया। वहां उपस्थित सभी भक्तों ने मैय्या, बाबा एवं हनुमान जी का आशीर्वाद प्राप्त किया। **-मंजु पालीवाल**

साई महिला परिवार द्वारा मल्लांवाला खास में भजन कीर्तन

मल्लांवाला खास: दिनांक 21 अप्रैल 2024, रविवार को बाबा रामलाल जी की कुटिया, मक्खू रोड, रेलवे लाइन के नज़दीक, मल्लांवाला खास में बहुत ही श्रद्धा भावना के साथ कीर्तन करवाया गया। इस कीर्तन को करने के लिए श्री साई महिला परिवार ज़ीरा को विशेषतौर पर आमंत्रित किया गया। कुटिया के मुख्य संचालकों ने बहुत सी संगत समेत फूलों की वर्षा करके तथा स्वागत के गीतों का गुणगान करके साई महिला परिवार ज़ीरा का हृदय

से स्वागत किया। ठंडे मीठे जल की सेवा के बाद कीर्तन प्रारम्भ हुआ। कीर्तन का श्रवण करने के लिए बहुत लोग कुटिया पहुंचे। श्री साई बाबा सेवा समिति ज़ीरा के प्रधान श्री संदीप शर्मा जी अपना कीमती समय निकालकर परिवार सहित कुटिया पहुंचे। श्री साई महिला परिवार वैलफेयर सोसाईटी ज़ीरा के मुख्य सदस्य शरणजीत कौर जी के अतिरिक्त सिंपल जी, सोनिया जी, कृष्णा बाबा, रीतू राना, निम्रता मुंजाल, वंदना बांसल, सुमन सिदोड़ा, मधु शर्मा तथा रेनू धुन्ना जी मौजूद थे। अरदास और आरती के साथ कीर्तन की समाप्ति की गई। कुटिया के मुख्य सदस्यों ने ज़ीरा के साई महिला परिवार को सरोंपो के साथ सम्मानित किया। पूरी-चने के लंगर के बाद जलेबी तथा लड्डू का प्रसाद वितरित किया गया। बाबा रामलाल जी की कुटिया के सभी सदस्यों ने बहुत श्रद्धा के साथ साई महिला परिवार ज़ीरा को विदाई दी। **-नम्रता/शरणजीत कौर**

Ramnavami Celebrated In Shirdi

Shirdi: Shri Ram Navami Festival organized by Shri Sai Baba Sansthan Trust Shirdi was celebrated on 16th, 17th & 18th April 2024. Samadhi Mandir and its surroundings were beautifully decorated with attractive flower decoration with the generous donation from Shri Venkata Subramaniam from Bangalore.

On the first day of the festival, after Kakad Aarti at 5:15 am, procession of Sai Baba's Portrait, Idol, Veena and the holy Sai Satcharitra were taken out to Dwarkamai. Sansthan's Ad-Hoc Committee Member and District Collector Shri Siddaram Salimath carried the holy Shri Sai Satcharitra Pothi, Sansthan Deputy Chief Executive Officer Shri Tukaram Hulwale and Administrative Officer Shri Vittalrao Barge carried Baba's photograph and Chief Executive Officer Shri Goraksh Gadilkar carried Veena and participated in the procession. Sansthan Chief Acccountant cum Administrative Officer Smt. Mangala Varade, Temple Incharge Shri Ramesh Choudhary, Sansthan PRO Shri Tushar Shelke, Temple Priests, Sansthan Staff members, local villagers and devotees participated in large numbers in the procession.

Various religious and cultural programs were organized by Sansthan during three days celebration, such as akhanda Shri Sai Satcharitra parayan, Baba's Pada Pooja, ritualistic worship of Holy Padukas at the Samadhi Mandir. Ritualistic worship of wheat bag was performed at the Samadhi Mandir and wheat bag was replaced at Dwarakamai. Everyday Sai bhajan program by various artists was held on Samadhi Mandir Shatabdi Mandap Stage. The audience responded enthusiastically to this program. All the artists were felicitated on behalf of Shri Sai Baba Sansthan.

On 17th April, Samadhi Mandir was kept open throughout the night for darshan. Lakhs of Sai devotees got the benefit of Shri Sai Baba Samadhi Darshan. Entire Shirdi town reverberated with Sai Naam Jaykaras by lakhs of devotees, who came along with Palanquins from various cities. At 5:00 pm, Shri Sai Baba Chariot Procession was taken out throughout Shirdi village. In this Chariot procession, Sansthan officials, Sai devotees and Shirdi villagers participated in large numbers along with Cymbals, Lezium, Band Troupe and Dhol etc.

On the occasion of Shri Ramnavami festival, Sai devotee Smt. Sunita Poddar donated Rs.31,00,000/- to Shri Sai Prasadalaya.

A Dish Washing Machine was inaugurated at Shri Sai Prasadalaya.

On concluding day breaking of Dahi Handi utsav was held in a spiritual atmosphere.

For the successful completion of Shri Ram Navami festival celebration, under the able guidance of Shri Sai Baba Sansthan Chairman and Chief Sessions and District Judge Shri Sudhakar Yarlagadda, Committee Member and District Collector Shri Siddaram Salimath, CEO Shri Goraksh Gadilkar, Deputy CEO Shri Tukaram Hulwale, Sansthan Administrative Officers Shri Vittalrao Barge, Smt. Prajna Mahandule, Dr. Shailesh Oak, Executive Engineer Shri Bhikan Dabhade, Security Officer Shri Rohidas Mali, all Department Heads, all the employees have put in special efforts.

Nita Ambani Visits Shirdi

On 22nd April 2024, Mrs. Nita Ambani visited Shirdi and had Shri Sai Baba's Samadhi Darshan. On this occasion Shirdi Sansthan's Chief Executive Officer Shri Goraksh Gadilkar, Mrs. Vandana Gadilkar, Temple Incharge Shri Ramesh Choudhary, Public Relation Officer Shri Tushar Shelke and Security Officer Shri Rohidas Mali were also present. After darshan CEO Shri Goraksh Gadilkar felicitated her with a Shawl, Baba's Idol and Prasad.

Ramnavami Celebrated at Shree Sai Natha Gnyana Mandira

Bangalore: On 17th April 2024, on the occasion of first Ram Navami after the consecration of the Ram idol in Ayodhya was a special and memorable occasion at Shree Sai Natha Gnyana Mandira Baba Temple Mallur (Bhatrenahalli) Bangalore Rural Devanahallli Vijayapura.

The temple was beautifully decorated with flowers and a grand procession of Palki was carried out. The devotees of Shree Sainatha Gnyana Mandira played bhajans and did kirtan.

In the morning Abhishekam of Shri Ram Chandra, Shri Laxman, Ma Sita and Saibaba was done, after that Alankaram and Kalash sthapna was done. After that Ganpati swami puja Shri Saibaba puja, Ayappa Swami puja, Subramaniam Swami puja and Ishwar Swami puja was performed.

On this occasion, Shri Ram Chandra Swami mantra Homa & Rama Taraka homa was also performed.

A traditional South Indian beverage called "panakam" made of Musk Melon Fruit, water, and jaggery was served to all the devotees along with buttermilk and Kosumbri (South Indian Salad) as prasadam. The vibe of this place was amazing on this day, and it was a great experience for everyone who visited.

At 2 pm Aarthi was performed and Shri ram Chandra Swami bhajans were recited till 5:45 pm. The program concluded with Shej Aarthi. The program was organised by the members of temple committee. The devotion and energy of the devotees added to the festive atmosphere, and everyone left feeling blessed and spiritually uplifted. **-M. Narayanaswamy**

How Sai Baba Came to Tanzania (East Africa)

This true story is based on this writer's personal experience of April 8, 2024, during a flight from Nasik to Ahmedabad.

On the no-service, small aircraft the seat allocated was 1D which incidentally was next to the emergency exit. Uncomfortable at seeing a lady (writer)

sitting there, the polite air hostess shifted me to another vacant seat. The conversation began with the lady sitting next to me.

"Were you on a visit to Nasik?"

"No, I had gone for a Vipasana session to Igatpuri. And you? What took you to Nasik?"

"Actually Shirdi! I Was there to attend an event.

"O that's nice. Even I sort of believe in Shirdi Sai Baba, you know He sent me a message once, when I did not even know much about Him." The lady volunteered more information, I feel Baba is looking after me and my family. And you know, my husband set up the first Sai Baba temple of Tanzania!"

"Oh my God! That's so amazing! Would you like to share how Baba made him a medium to set up His temple?"

"Actually my husband will tell you the full details since I may miss out stuff. Let us call him on landing and try to get him to talk to you."

Then she launched into some details about how the temple was set up despite intense opposition and lobbying against it.

"You know a certain gentleman, a devoted Sai bhakt had brought this magnificent Sai Baba idol from India with the vision of setting it up in the Shree Sanatan Dharma Sabha (Lakshmi Narayan temple) in the centre of temple street. Although elected to the temple committee, he could not succeed in bringing the idol to the temple for seven long years, He could not battle the opposition, and Baba's idol remained in a room in the premises, without sthapana or puja! May have been around 2014-2015. Then, during Covid time, Shirdi Sai Baba devotees call to set up the idol became louder and firmer. At that time my husband, Malhar Dave decided to join the election fray and as if by divine decree and Sai ichha, was elected to the post of Chairman of the Shree Sanatan Dharma Sabha Committee."

Soon it was time to land and true to her word she connected this writer with her husband, Malhar. During the cab ride Malhar shared: "Interestingly, the two lobbies- pro and against- both backed me. The opposition to Sai Baba murti was on the grounds that He was a Muslim and only a Saint not God and the temple is for Hindu Gods etc. Support of the anti-lobby created a wrong impression that even the candidates were against Baba temple, although we were not. I made it absolutely clear that if elected the primary task would be to bring Sai Baba into the Brahma Samaj temple. Success was ours! With 100% votes, the new committee was unanimously elected. In my first speech as Chairman, I reiterated my commitment to setting up the temple immediately. It was my priority. The work to set up Sai Baba temple began in earnest with much joy and enthusiasm. In July 2021, the first temple of Shirdi Sai Baba in Tanzania, was set up. The naysayers were left speechless. Courage failed those who had once threatened to throw Baba's idol, damage it, if brought to the temple. Their threats dissipated on seeing Baba's joyful face and experiencing His grace. We held a fabulous week-long puja and celebration. Baba's idol was installed with much fanfare beginning with a three-day havan and prayers, bhajan kirtan etc. On each of those seven days, at least two thousand devotees partook of the Maha Prasad and food made at the temple every day. Even now, every Thursday, Khichdi Prasad is served to hundreds of visitors."

"People who wanted me ousted found another flaw. They raised objections that I wasn't a Tanzanian citizen but an Indian one and thus could not be the Chairman. I accepted their word and this new challenge." This opposition was tackled very tactfully. Physical prowess is inessential, because Baba seated in the man (mind) guides and gives ideas. Instead of getting angry or upset, the gentleman resigned from the Shree Sanatan Dharma Sabha, but soon after got elected as the President of the Hindu Council of Tanzania instead, an organisation which has complete hold over all temples and other Hindu dharm related matters. The opposers were stumped.

This Sai story needed to be told first, because Baba orchestrated this unexpected meeting of strangers- Rucha, Bindu and telephonically with Malhar in Dar Es Salaam Tanzania.

Baba is the creator, Baba chooses the writer and makes her/ him word it the way He would like it!

Before concluding the story, one Ovi in Baba's own words- "At that moment, Baba said casually, "Let four of us sing

a bhajan. The doors of Pandharpur have opened. We can sing joyously". (Ovi 119).

Bhajan- "I am going to Pandharpur – going, going. There I will stay. There I will stay, stay. That is the abode of my Master."

In Ovi 119 from Chapter 7, we understand how Baba uses different pretext to introduce spiritual norms. Along with showing that time can be spent well by taking God's name, Baba also exhibited His Omniscience. While the devotees Mhalsapati, Appa Shinde and Kashiram who were present, remained oblivious of what was going to happen next, and why Baba had abruptly suggested to sing a song on Vitthal of Pandharpur, the all-knowing Sai Maa was conveying love and awareness for the devotee who was about to reach Dwarkamai- Nana Saheb Chandorkar. He needed Baba's consent before taking up a new assignment in Pandharpur. Through an apt bhajan Baba gives His permission and declares that He is with Nana during the tenure and there is no need to worry- an indication to every bhakt. Baba knew in advance, what Nana wanted. Baba's love, His all-knowing nature and His presence wherever we may be, is conveyed through this single Ovi. Om Sai Ram!

-Bindu Midha

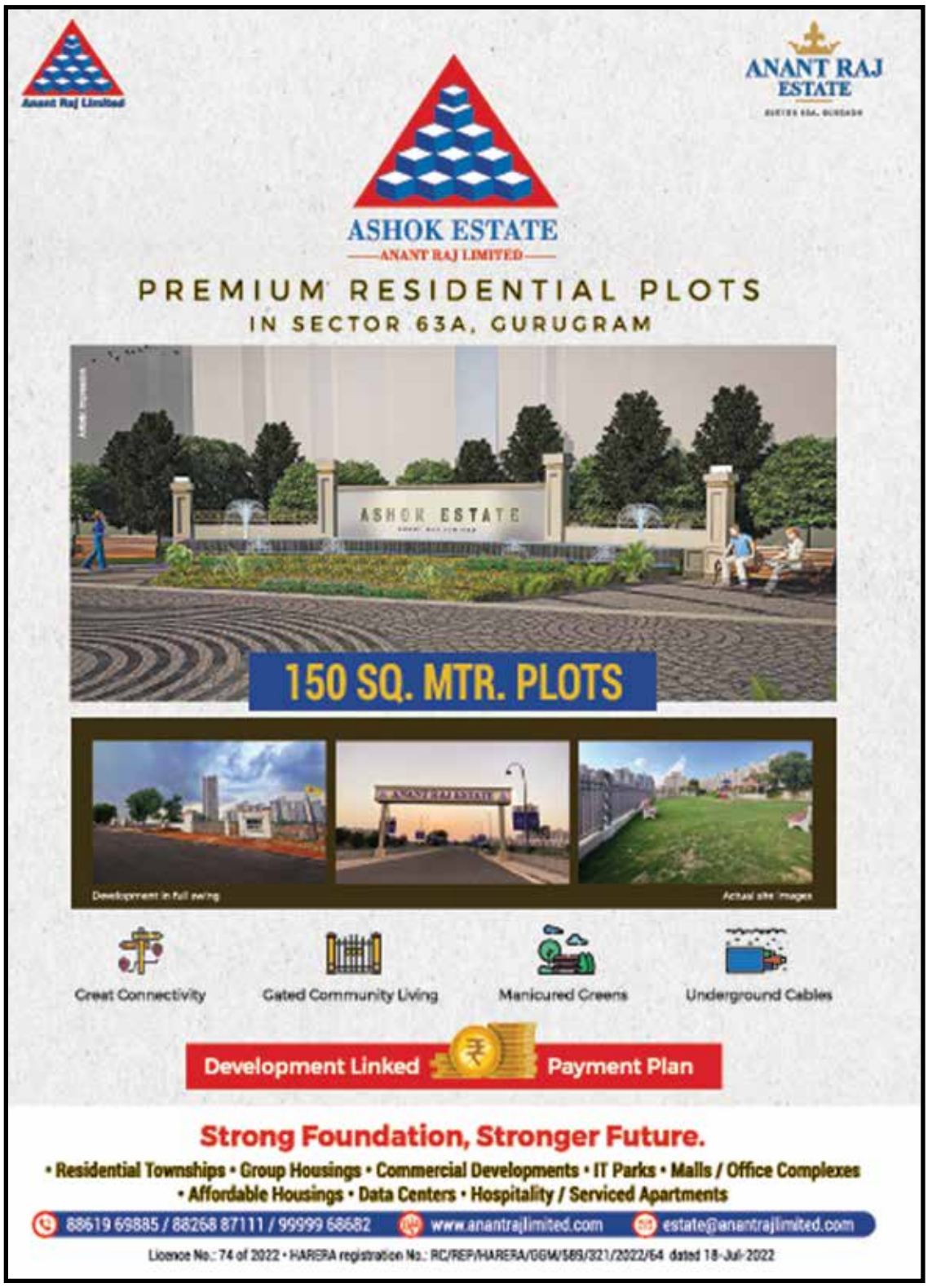

Sai Sangam 5 Organised in Shirdi by Sujay Khandelwal

Shirdi: Step into the enchanting world of Shirdi, where the essence of devotion permeates every corner during Sai Sangam 5, which was organized from 4th April to 7th April 2024 by Baba's ardent devotee Mr. Sujay Khandelwal. This divine gathering of devotees from all walks of life was a celebration of love and faith, a testament to the eternal bond between Shri Sai Baba and his children. From the mesmerizing Palki Procession to the soul-stirring Bhajan Sandhya, the air in Shirdi was filled with a celestial symphony that transcended earthly boundaries. The interactive sessions by Sumit Ponda from Bhopal and Pawar Kaka from Pune provided a platform for devotees to share their personal journeys, creating a tapestry of shared experiences that highlighted the universal love of Saibaba.

The joyous chants of nagar sankirtan by Shri Natrajan of Sai Mitr and the selfless act of annadaan at Sai Ashraya embodied the spirit of compassion and service that Sai Baba preached. The Mahadhuni ceremony, with flames dancing in reverence, symbolized a collective unity and a burning aspiration for spiritual growth.

The launch of Sai Vaani, a spiritual library, offered a beacon of hope and wisdom to guide pilgrims on their spiritual quests. As devotees bid farewell to Shirdi, they carried with them an indelible mark of shared experiences and divine blessings, their hearts overflowing with gratitude.

Though the event may have concluded, the spirit of Sai Sangam lives on in the memories of devotees. The personal experiences shared by countless devotees serve as testaments to Sai Baba's transformative power and the unwavering spirit of devotion that binds them together. The Chairman of Sri Sai Spiritual Centre Bangalore Mr. Srichand Rajpal & Mrs. Lata Rajpal distributed beautiful calanders to all devotees.

Mr. Sujay Khandelwal organised the program in association with Hetal Patil- Sai Yug Network, Murali Kanna- Secretary of Global Maha Parayan & Sai Yug network & Pooja Garg- Founder of Global Maha Parayan.

All devotees from India & overseas, who participated in this program, thanked Sujay ji for the wondeful event. **-G.R. Nanda**

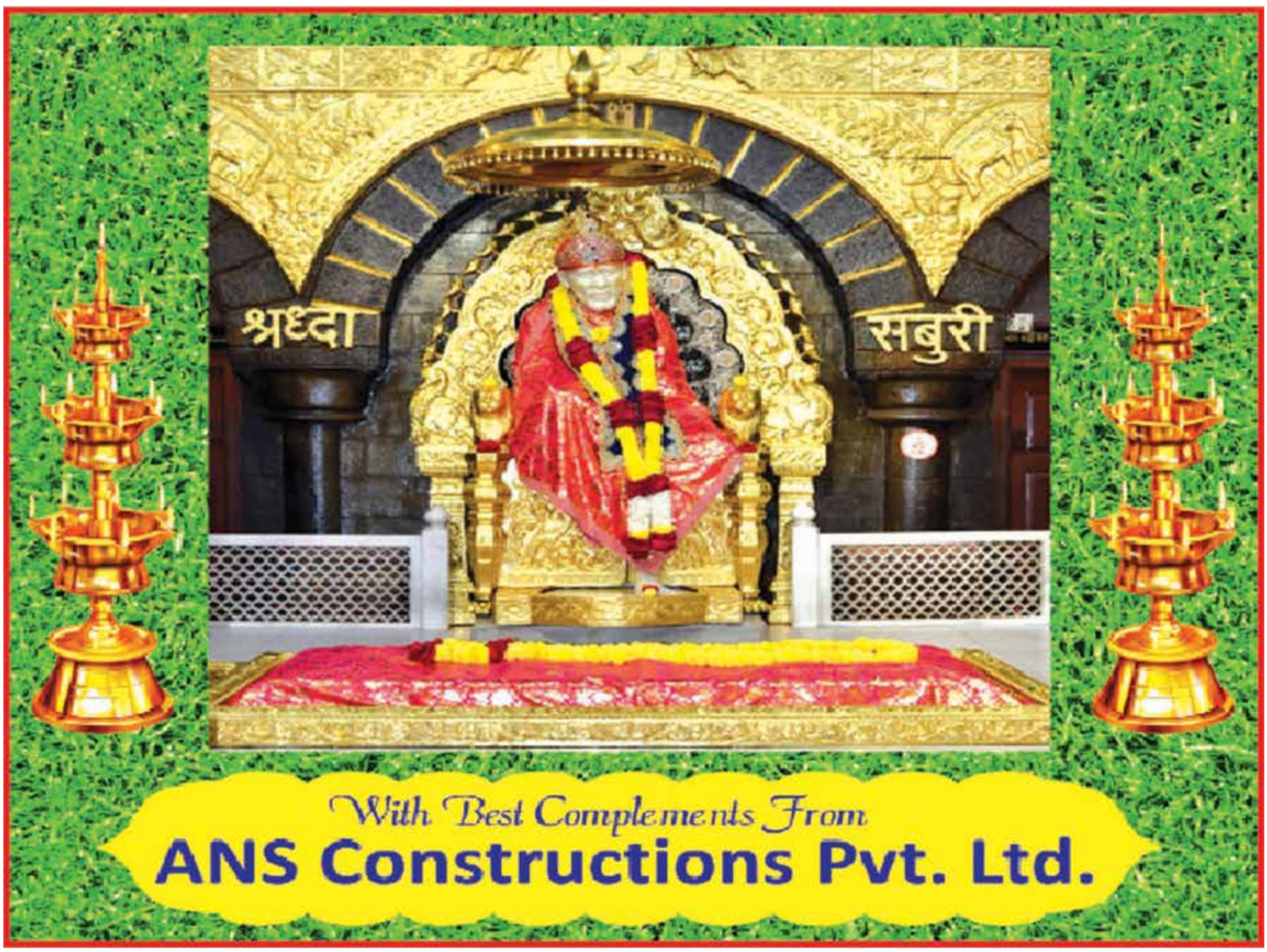

Sahasranama Doctrine of Nishkama Karma

Whatever is perceived is my image only, whether it is a worm, an ant, a poor wretch or a king.
–Shri Sai Satcharita (Chapter 3, Ovi 143–148)

Nishkama karma is not mere worklessness, external passivity or idleness. It is the state of experience that I am the Atman, the pure spirit, the uninvolved witness of passivity as well as activity of body– mind. Willful worklessness amounting to idleness is not the aim.

When our ego identifies itself with the body and feels 'I am the body', we become an actor, involved in the work. On the other hand, if we feel that 'I am the Atman', we remain as the spirit, the pure witness. This state is called 'nishkama' or egoless passivity of the spirit. Absolute passivity is impractical as living becomes impossible. 'To awaken, sit calmly. Let each breath clear your mind and open your heart' (The Buddha).

So what we are expected to do is to work, controlling the senses by the mind and doing our duty with utter dedication and submission to Lord Sainath, without caring for the fruits of the work. The 5th shloka of Vishnu Sahasranama states:
Swayambhu Shambhur-Adityaha Pushparaksha Mahaswana Anadinidhano-Dhata Vidhata Dhaturuttamaha

The self-born Sai Baba is Swayambhu – about whose birth and lineage we are ignorant. He is Shambhu – the bestower of good. He is the Sun-God Aditya and is lotus-eyed as Pushkaraksha. As Mahaswana he is Om-kara of holy sound. He is beyond birth and death as Anadinidhana. He is Dhata –the supporter and Vidhata –the dispenser and the supporter of supporters. He is Dhaturuttama – the best of all substances. Sai Baba taught the businessman who came to Him for obtaining Brahma jnan that the practice of nishkama karma is easier said than done. Even though he had 250 rupees in a bundle of currency notes, the businessman did not volunteer to give 5 rupees to Sai Baba when He was frantically seeking a loan. Ultimately, Sai Baba rebuked him for his infatuation towards money and still trying to seek Brahma jnan An attitude of being a witness does not come unless we feel detached. This happens after we understand and appreciate about what we really as the glories of the Creator.

Nothing belongs to us. We came with nothing. Oxygen was provided to us and we are provided with food so that the body can last for many years. Nature meets all our needs. The world is like a well-endowed guesthouse. We can live well by helping one another according to Nature's design.

We cannot be an owner if we are not the author. We cannot say that we created a business empire for all that was needed, like the ground, building material, human beings and raw material, was already available. The Creator is the material cause of Creation, in addition to being the efficient cause.

In his book Life of Sai Baba, Shri Narasimha Swamiji points out that believing human ownership is only an alteration of Sai Baba's will by a person's ego. When this distortion is overcome through devotion and submission to the divine will of Sai Baba, complete peace and tranquility is attained even in the midst of all the turmoil. Shri Narasimha Swamiji wants us to establish this relationship between Sai Baba and the devotees. Then it will be easy to practice detachment, slowly graduating to the state of being a witness. We will begin to see and appreciate Sai Baba's manifestations all around with a sense of awe and wonder.

Creation and Time are endless, being cyclic. The process of creation has a purpose for the jiva or the individual soul – to help him or her to evolve so as to regain their full divine nature. Human birth is precious as it is the only vehicle with the potential to reach the ultimate goal of liberation from the cycle of birth-and-death. The worldly human only needs to change their attitude towards work. We will be successful in doing nishkama karma when we can dwell in the state of a witness while discharging life's duties, without getting attached to the results. This can happen in two stages. In the first stage, all fruits of actions are assigned to Sai Baba – Sainatha Arpanamastu. This is called 'prasada buddhi', or graceful acceptance of results as prasad, that is, a divine blessing.

The yogi still has the sense of agency, the feeling of doer-ship. In the second stage, at a higher level of perfection, the sense of agency is also given up. This is known as 'Isvararpana buddhi', offering the choice of action to the Divine. This attitude is based on an appreciation of the Divine even before we begin our action.

Thus it is bhakti that completes the Vishnu Sahasranama doctrine of dedicated and detached work. The practice of nishkama karma leads us eventually to nishkama siddhi – an interim stage before complete enlightenment.

-Dr. Vijayakumar

Courtesy: An Insight into Vishnu Sahasranama through Sai Baba

Published by: Sterling Publishers Pvt. Ltd.

to be contd...

Anniversary Celebrated at Sai Temple Melbourne

Australia: On 16th April 2024, Sthapna divas anniversary of Shirdi Sai Sansthan, 32 Halley Avenue, Camberwell, Victoria, Melbourne was celebrated with full enthusiasm. The entire temple was decorated with colorful flowers. Baba looked very attractive.

The program started with holy bath of Shri Sai Baba with Kailash water. Which was followed by Baba's Abhishek. Baba was dressed up in beautiful poshak (dress), carried by Neelu Jaggi from Delhi for this special occasion. After that Puja and Homa were performed with full rituals by temple Priest. The Home continued for three hours.

A delicious cake baked by Lakshmi (a local resident) was cut in front of Baba to celebrate the birthday of the temple. Lungar Prasad was distributed to all devotees who kept visiting the temple the whole day.

"Sai Mission with Sai Vision" Book penned down by Neelu Jaggi was also released on this auspicious day. A book that gave an insight into the history of the Sai Sansthan in Melbourne.

Mrs. Neelu Jaggi established this beautiful temple in April 2006.

In all, it was indeed a very blessed and beautiful celebration with Baba's presence being felt by all those who came to pay obeisance to Baba.

-Anibha Australia

For Daily Shirdi Darshan
Latest News &
Experiences of Devotees
Subscribe and Like
Youtube Channel of
Shri Sai Sumiran Times
https://youtube.com/@shrisaisumirantimes3022

Our Associates

Singapore
Pt. Shreedhar
U.S.A.
Anil Chadha
Dr. Rangarao Sunkara
Ohio
Varaha
Florida
Kamal Mahajan
Brampton
Devendra Malhotra
Australia
Anibha Singh
New Zealand
Anjum Talwar
Japan - Kaco Aiuchi
Bahrain
T.P. Sreedharan
Canada
Ruby Kaur, Smita Sohi
Germany
Sugandha Kohli
Dubai
Ajay Sharma
Sri Lanka
S.N. Udhayanayahan
Nepal
Vishnu Pokhrel, Madhu

Our Associates

Agra - Sandhya Gupta
Aligarh- Seema Gupta
Ashok Saxena, D.P. Agarwal
Ambala - Ashok Puri
Amritsar- Amandeep
Ahmedabad - Arjun Vaghela
Aurangabad-Ashok Bhanwar Patil
Assam - Bidyut Sarma
Badayun - Varinder Adhlakha
Bhilwada - Kailash Rawat
Banas - P.K.Paliwal
Bareilly - Kaushik Tandon
Sapna Santoria, Prathmesh Gupta
Bhopal
Ramesh Bagre, Surendra Patel
Bangalore-Chandrakant Jadhav
Bathinda-Govind Maheshwari
Bikaner- Deepak Sukhija
Surender Yadav, Pt. Sadhu Ji
Purnima Tankha,
Bihar- Balram Gupta
Bokaro - Hari Prakash
Bhagalpur - Anuj Singh
Bhuvneshwar (Odisha)
Pabitra Mohan Samal
Chandigarh - Puneet Verma
Chennai - M. Ganeson
Chattisgarh- Nikhil Shivhare
Dehradun - H.K. Petwal,
Akshat Nanglia, Mala Rao
Dhanaula - Pradeep Mittal
Faridabad - Nisha Chopra
Ashok Subromanium,
Firozpur - P.C. Jain
Goa - Raju
Gurgaon - Bhim Anand,
Alok Pandey, Shyam Grover
Ghaziabad - Bhavna Acharya
Usha Kohli, Dinesh Mathur
Gujarat - Paresh Patel
Gwalior - Usha Arora
Haridwar - Harish Santwani
Hissar - Yogesh Sharma
Hyderabad - Saurabh Soni,
T.R. Madhwan
Indore- Dr. R. Maheshwari
Jalandhar - Baba Lal Sai
Jabalpur - Suman Soni
Chandra Shekhar Dave
Jagraon - Naveen Khanna
Jaipur - Puneet Bhatnagar
Kolkata - Sushila Agarwal,
D. Goswami
Kapurthala - Vinay Ghai
Korba - T.P. Srivastava
Kurukshetra - Yash Arora
Pradeep Kr. Goyal
Kaithal - Naveen Malhotra
Lucknow - Gayatri Jaiswal,
Sanjay Mishra, Rajiv Mohan
Ludhiana - Umesh Bagga,
Rajender Goyal, Avinash Bhandari
Mandi Govind Garh
Shunti Bhaji, Rajiv Kapoor
Mawana - Yogesh Sehgal
Meethapur - Shrigopal Verma
Meerut - Kamla Verma
Mumbai-Anupama Deshpandey
Kirti Anurag, Sunil Thakur
Moradabad - Ashok Kapur
Mussoorie- R.S. Murthy,
Surinder Singhal
Nagpur - Pankaj Mahajan,
Srinivasan, Narendra Nashirkar
Noida - Amit Manchanda
K.M. Mathur, Kanchan Mehra,
Panipat- Raj Kumar Dabar,
Sanjay Rajpal
Patiala - P.D.Gupta,
Dr. Harinder Koushal
Panchkula - Anil Thaper
Palam Pur - Jeewan Sandel
Parwanoo - Satish Berry,
Chand Kamal Sharma
Pune - Bablu Duggal
Sapna Lalchandani
Port Blair
J.Venkataramana, Ghanshyam
Pundri - Bunty Grover
Patna - Anil Kumar Gautam
Ranchi - Deepak Kumar Soni
Rewari- Rohit Batra
Rishikesh- S.P. Agarwal,
Ashok Thapa
Raigarh - Narinder Juneja
Roorkee - Ram Arya
Rudrapur-Naresh Upadhyaye
Shirdi - Sandeep Sonawane
Nilesh Sanklecha, H.P. Sharma
Sonepat- Rahul Grover
Sangrur - Dharminder Bama,
Sirsa-Komal Bahiya, Bunty Madan
Surat - Sonu Chopra
Sirhind - Satpal ji
Udaipur - Dilip Vyas
Ujjain - Ashok Acharya
Vidisha - Sunil Khatri
Zeera - Saranjeet Kaur

मेरा राम साई तू श्याम साई तू

मेरा राम भी साई तू
मेरा श्याम भी साई तू

मेरा गिरधर साई तू
मेरा जीवन आधार भी साई तू
तेरे संग ही तो साई,
मेरी ये ज़िन्दगी
तेरी भक्ति ही साई,
मेरी है बंदगी
तेरे विश्वास से साई
मैं तो जी गई
तेरे दरबार से साई
मिली मुझे हर खुशी
करूं शुक्राना तेरा साई सब रहमतों का
रहूं बन कर हमेशा भक्त तेरी चौखट का
मेरा राम भी साई तू, मेरा श्याम भी साई तू
मेरा गिरधर साई तू,
मेरा जीवन आधार साई तू

-संगीता ग्रोवर
लेखिका, गायिका, कवियित्री

साई के प्यारे श्रीराम

साई के प्यारे थे श्रीराम
मर्यादा की पराकाष्ठा थे श्रीराम
साई का सहारा थे श्रीराम
माता केकई, मां कौशल्या, सुमित्रा की आंखों का तारा थे श्रीराम
साई की श्वांस श्वांस में थे श्रीराम
रावण का उद्धार करने पृथ्वी पर

आए थे श्रीराम
अपने द्वारपाल जय, विजय,
रावण का सम्मान बढ़ाने आए थे श्रीराम
शबरी मां को दर्शन देने आए थे श्रीराम!!
अहिल्या निष्कलंक थी
संसार को बांटने आए थे श्रीराम
माता सीता का त्याग कर
प्रजा का अपवाद मिटाने आए थे श्रीराम
मित्रता निभाने, बाली का
वध करने आए थे श्री राम
असुरी शक्तियों के अत्याचार से
इस संसार की रक्षा करने आए थे श्रीराम
जय साईराम, जय साईराम, जय साईराम।

-किरण अरोड़ा

पृष्ठ 3 का शेष भाग

गुरुजी की ..

उम्र पछताऊंगी और समाज के ताने भी सुनूंगी। यह सुनकर गुरुजी ने मुझे कहा कि अगर ऐसी बात है तो आप चलो हमारे साथ और आपके पति को कुछ हो गया तो मैं ज़िम्मेदार हूं आपको किसी पर भरोसा हो ना हो मुझे अपनी शक्तियों पर गुमान है कि पल भर में कुछ भी कर सकती हैं। गुरुजी के मुख से यह बात सुनकर मैंने जाने की हामी भर ली और गुरुजी पर भरोसा जताया और हम बद्री विशाल धाम की यात्रा को 14 अक्टूबर को पूर्ण कर सही सलामत घर वापस लौट आए और तब से अब तक मेरे पति बिल्कुल स्वस्थ हैं। एक बार गुरुजी व संगत के साथ शिरडी श्री साई बाबा जी के दर्शन भी कर आए हैं। कहां गए वह डॉक्टर, कहां गए वह पंडित जो मेरे पति की मौत का टाइम निश्चित कर बैठे थे। सब झूठ ही साबित हुए और एक सदके में गुरुजी की सच्चाई सामने आई और हमें सचेत किया कि गुरु पर आस्था रखो तो कुछ पल के लिए नहीं बल्कि हमेशा के लिए। ऐसा नहीं की गुरु के पास एक मुलाकात की और फिर कभी याद भी नहीं किया, मगर याद रहे गुरु की रहमत कभी पीछा नहीं छोड़ती। हम चाहे लाख बुरा करें हम पर गुरु फिर भी रहमत बरसाते हैं। अब आप मेरा अनुभव पढ़कर यह अनुमान लगाइए कि ऐसे गुरु को आप कौन सी उच्च कोटि का दर्जा देना चाहेंगे। मैं तो ऐसे गुरु को सदैव महान मानती रहूंगी।

-सविता बल्हारा, नेब सराय दिल्ली

जीवन उसी का मस्त है
जो स्वयं के कार्य में व्यस्त है।
परेशान वही है जो दूसरों की
खुशियों से त्रस्त है।

साई की सीख

-पारूल प्रिया

सोलह वर्ष का सुंदर बालक जब शिरडी पधारा तो 'आओ साई' कहकर उसका स्वागत हुआ। फिर धीरे-धीरे कैसे साई के साथ बाबा जुड़ गया, पता ही नहीं चला। सब उन्हें साई बाबा कहने लगे। वे तो थे ही साई बाबा। लगता ही नहीं कि इसके सिवा उनका कोई और भी नाम हो सकता था। साई शब्द लेते ही भलेमानस व्यक्ति की तस्वीर आंखों के सामने उभरती है। हमारे साई बाबा से अधिक साई कौन होगा। बाबा कहते ही एक बुज़ुर्ग, एक पिता, एक रक्षक, एक सरपरस्त की शख्सियत सामने आ खड़ी होती है। हमारे साई बाबा सचमुच बाबा थे। उन्होंने अपने नाम को जिया। उन्होंने लोगों को केवल उपदेश ही नहीं दिए, उन उपदेशों को खुद जिया। वे एक साधारण मनुष्य थे, साधारण जीवन जीकर उन्होंने गरीब लोगों का सदा भला सोचा। सही मायने में वे गरीबों के देवता थे। अमीर तो बड़े-बड़े मंदिर बनवाकर अपने-अपने सोने-चांदी के देवता खड़े कर लेते हैं। वे गरीबों के जीवित देवता थे। आज भी, जब उनकी काया हमारे बीच नहीं है, वे हमारे बीच हैं, उनका नाम हमारे साथ है, उनका आशीर्वादरूपी हाथ हमारे सिर पर है, उनके ज्ञान का खज़ाना हमारे पास है। उनके भक्तों ने उनका समाधि मंदिर अपनी भक्ति से सजाया है, तभी तो वह सबसे न्यारा है। उनकी समाधि को छूकर कितनी शांति मिलती है। उनकी मूर्ति की शोभा देखते ही बनती है। उनकी आंखों में दया का सागर है। उनके चेहरे पर भव्यता है। उनका मुकुट उनकी सजावट का प्रतीक है-तन की सजावट नहीं, मन की सजावट जो उन्होंने अपने सद्गुणों से प्राप्त की तथा वे सभी को उन सद्गुणोंरूपी आभूषणों से सजा देखना चाहते हैं। उनका सिंहासन उनकी ऊंची शान का प्रतीक है। वह शान जो उन्होंने अपने जीवन की सच्चाई के बलबूते प्राप्त की और हमें भी सच्चा जीवन जीकर जग में शान कमाने के रास्ते की ओर अग्रसर करते रहते हैं। चेहरे पर भव्यता यों ही नहीं आ जाती, वह आती है मन की शांति से, आत्मा की शुद्धि से। जिस प्रकार सागर का कोई छोर नहीं होता वैसे ही बाबा की दया का कोई छोर नहीं। मिलेगा आपको ऐसा व्यक्ति, जो पहले कुत्तों को खिलाए, फिर खुद खाए। हमसे भक्षा मांगकर उन्होंने हमें भिक्षा का महत्व बताया। हमें बताया कि अगर हमें जीवन में भगवान की कृपा से ज़रूरत से कुछ अधिक प्राप्त है, तो हम उस हिस्से में से कुछ उन लोगों में बांट दें, जिन्हें कुछ कम प्राप्त है। क्योंकि अगर हम ऐसा नहीं भी करेंगे तो भी वह अधिक हिस्सा हमारे काम तो आने वाला नहीं है। उसे हम यहीं छोड़ जाएंगे, क्योंकि इस जग में सब खाली हाथ आते हैं और खाली हाथ जाते हैं तो फिर क्यों न अपने हाथों ये नेक कमाई कर लें। इसमें हमारा कोई मोल तो लगता नहीं। केवल भगवान् को दिया उसी के लोगों को ही तो अर्पित करना है। तुम अगर बांटोगे तो भगवान तुम्हें और देगा। तुम इस चक्कर में न पड़ो कि अगर भगवान् को तुमसे ही गरीबों को दिलवाना है, तो खुद ही उन्हें क्यों नहीं दे देता। यही तो भगवान की माया है, उसकी सत्ता है। न तो आज तक कोई भगवान की माया को जान पाया है और न ही उसकी सत्ता में दखल दे सकता है। भगवान को अपने सभी जीव प्रिय हैं। प्रश्न उठ सकता है कि अगर भगवान् को सभी जीव प्रिय हैं तो फिर यह अंतर क्यों? क्यों कोई अमीर है और कोई गरीब? क्यों कोई रोगी है? क्यों कोई अच्छा है और कोई बुरा? अरे-अरे, तुमने तो खुद ही अपने प्रश्न का उत्तर ढूंढ लिया। हमारी यह अच्छाई-बुराई ही तो हमारे भाग्य की निर्माता है। हमारे कर्म ही हमारा भाग्य लिखते हैं। बजाय सामने वाले के अच्छे भाग्य से ईर्ष्या रखने के, क्यों न अपना भाग्य भी संवार लें, अपने अच्छे कर्मों द्वारा। अब प्रश्न उठता है कि अच्छे कर्म क्या हैं? साई यहां भी हमारी मदद करते हैं। वे बताते हैं कि कभी झूठ मत बोलो। कभी किसी का मन न दुखाओ। कभी किसी की निंदा न करो। कभी अपनी प्रशंसा न करो। जहां तक हो सके दूसरों की मदद करो। यह मदद तन, मन या धन की हो सकती है। तन से तात्पर्य शारीरिक सेवा। मन का अर्थ अच्छे विचारों का आदान-प्रदान। धन से आशय-दान करना। आप कहेंगे इसमें नया क्या है? यह तो सभी धर्म कहते हैं। पर साई यही बात जब हमें कहते हैं तो वे केवल शब्दों का ही प्रयोग नहीं करते, वे खुद इन सद्गुणों का एक जीवंत उदाहरण बनकर हमारे सामने उपस्थित हो जाते हैं। साई इन सद्गुणों का एक जीता-जागता चित्र हमारे सामने उपस्थित करते हैं। यह चित्र इतना साफ-सुथरा और स्पष्ट है कि अनपढ़ व्यक्ति की भी समझ में आ जाता है। बाबा को कुछ कहने की आवश्यकता नहीं पड़ती, कुछ समझाना नहीं पड़ता। उनकी एक झलक मात्र ही उनके ज्ञान का खज़ाना हमारे सामने खोल देती है। आओ, इस खज़ाने से जितना चाहो ले जाओ। यह खज़ाना तो खत्म होने से रहा, पर अगर आप सच्चे विद्यार्थी हो तो आपका यह फर्ज़ बनता है कि आपने जो ज्ञान साई के खज़ाने से प्राप्त किया है, उसका चौगुणा इस जग को लौटा दो, क्योंकि ज्ञान वह पूंजी है, जो बांटने से कभी नहीं घटती बल्कि बढ़ती ही है।

साई का ज्ञान प्राप्त करने के लिए हमें बड़े-बड़े ग्रंथ नहीं पढ़ने, न ही कोई प्रवचन सुनने हैं। ज्ञान तो हमारे अंदर ही छिपा है। ज़रूरत है तो केवल उसे खोज निकालने की। इस अंत:ज्ञान की खोज का रास्ता भी बहुत आसान है। केवल दो ही हथियार काफी हैं इस खज़ाने को खोजने के लिए। वे हथियार हैं प्रेम और सच्चाई। हमें केवल दो ही प्रण करने हैं कि हम सदा सच के रास्ते पर चलेंगे और भगवान् के बनाए हर जीव पर प्रीति रखेंगे। आगे के द्वार खुद-ब-खुद खुलते चले जाएंगे। प्रेम तो भगवान का दिया हुआ अनमोल उपहार है और सच वह रोशनी है, जो मन का सारा अंधकार मिटाकर हमें भगवान के निकट ले जाती है।

साई कहते हैं कि अगर इस संसार में आए हो तो संसार के सभी नियमों का पालन करो। वे हमें संन्यास लेने को नहीं कहते। ग्रहस्थ सबसे बड़ा आश्रम है। गृहस्थ जीवन जीते हुए अगर हम समाज के लिए कुछ करें, समाज को बेहतर बनाये, समाज को कुछ दें, तभी हमारा जीवन सार्थक है।

मां-बाप को उन्होंने सबसे ऊपर स्थान दिया है। गुरू और भगवान से भी पहले। भगवान् ने मां-बाप को सृष्टि के निर्माण का कार्य सौंपा है तो फिर मां-बाप तो अपने आप ही भगवान से भी बड़े हो गए। बाबा कहते हैं मां-बाप की सेवा ही सबसे बड़ी सेवा है। फिर आते हैं बच्चे, जब हम बच्चे के जन्मदाता हैं तो हमारा कर्त्तव्य बनता है कि हम उसे बेहतर इन्सान बनाएं। और बेहतर इन्सान तो हम तभी बना पाएंगे जब हम बाबा की तरह उनके सामने एक बेहतर इन्सान की जीवित मूर्ति बनकर खड़े होंगे। इसी प्रकार अगर प्रत्येक व्यक्ति बजाय दूसरों को सुधारने के, पहले खुद को ही सुधारने की ठान ले, तो हम सब मिलकर अवश्य ही एक ऐसे बेहतर समाज की रचना कर सकते हैं जहां कोई छोटा-बड़ा नहीं, कोई अमीर-गरीब नहीं, कोई तेरा-मेरा नहीं, कोई हिंदू-मुस्लिम नहीं, कोई मंदिर-मस्जिद नहीं।

यह ठीक है कि सबने अपनी-अपनी सुविधा से भगवान की मूर्ति गढ़ ली है, उसे एक अलग नाम दे दिया है, पर इससे क्या फर्क पड़ता है? नाम बदल देने से भगवान तो नहीं बदल जाते! मालिक तो सबका एक ही है। क्या ही अच्छा हो अगर हम अपने धर्म का पालन करें और सामने वाले को अपने धर्म का पालन शांति से करने दें। आज़ादी तो सभी को प्रिय है। हिंदू अगर मस्जिद के आगे हाथ जोड़ दे और मुसलमान मंदिर के आगे नतमस्तक हो जाए तो क्या कुछ अनर्थ हो जाएगा?

हम सभी को एक अच्छे घर, अच्छे खाने, अच्छे पहनावे की चाह होती है। हम घर की सजावट और उसकी स्वच्छता पर कितना धन और समय लगाते हैं। प्रतिदिन हमें पहनने को अच्छे-से-अच्छे, नए और कीमती वस्त्र चाहिए। प्रतिदिन खाने में कुछ अच्छा, कुछ नया, कुछ स्वादिष्ट हमारी चिह्वा की मांग होती है। पर मन का क्या? कभी हमने मन की सजावट और स्वच्छता की सोची है? अगर हम अपने मन को बाबा की तरह सद्गुणों से सजा लें और अपने मन और आत्मा को उजला कर लें तो हमारा घर तो क्या यह संसार भी हमारी ज्योति से प्रकाशमान होकर जगमगाने लगेगा और हमारा तन हमारे ज्ञान की रोशनी में नहाकर अति सुन्दर प्रतीत होगा। पाप खुद-ब-खुद हमसे दूर भागेंगे और पापों को धोने के लिए किसी गंगा स्नान की आवश्यकता ही नहीं रह जाएगी। साई कहते हैं कि यह अच्छा है कि पहले पाप करो और फिर उन्हें गंगा में नहाकर धो लो। कोई यह नहीं सोचता कि पाप किए ही क्यों जाऐं। हमें कभी यह नहीं भूलना चाहिए कि भगवान के दरबार में हमारे सभी अच्छे-बुरे कर्मों का हिसाब होता है और भगवान की कचहरी में हमें अपने सभी कर्मों की जवाबदेही देनी पड़ती है।

हम जानते हैं कि सभी जीव भगवान ने बनाये हैं और भगवान कण-कण में विराजमान हैं। हम भगवान् से प्रेम भी करते हैं। तो फिर क्यों हम भगवान के बनाये जीवों से घृणा करते हैं, घृणा को मन से निकालकर उसके स्थान पर प्रेम को स्थापित कर दो। फिर देखो कैसे परम आनंद की प्राप्ति होती है। तुम्हारे चेहरे, तुम्हारा हाव-भाव, तुम्हारी हर अदा से ऐसा आनंद फूटेगा कि तुम्हारे संपर्क में आनेवाला हर व्यक्ति उसी प्रकार आनंदित होगा जैसा आनंदित हम बाबा के सान्निध्य में महसूस करते हैं। जैसे बाबा संकट के समय हमारी रक्षा हेतु दौड़े आते हैं, क्यों न हम अपने आस-पास मौजूद संकटग्रस्त लोगों की समय पर मदद करें। केवल बाबा का नाम लेने मात्र और उनके चरणों में शीश नवाने से ही हम साई भक्त नहीं बन जाते। यदि हम सच्चे साई भक्त हैं तो हमें साई जैसा बनना होगा। साई के गुण अपनाने होंगे। साई का अपनाया एक गुण भी हमारे जीवन को आनंदमय बना देगा। आप शुरूआत तो कीजिए। केवल एक गुण अपना लो। बाकी के गुण खुद-ब-खुद खिंचे चले आयेंगे। आपको कोई प्रयत्न नहीं करना पड़ेगा। आपको पता भी नहीं चलेगा कि कब आप साईमय हो गए, साई में लीन हो गए, साई जैसे बन गए। जिस प्रकार आप साई के गुण गाते हैं, वैसे ही जग में आपका भी गुणगान होगा। लोग श्रद्धा और प्रेम से आपका नाम लेंगे। आपके जाने के बाद आपको याद करेंगे। आप भी साई ती तरह अजर अमर हो जाएंगे।

आभार: **साई अमृत वर्षा**

पुरानी चोट अथवा दर्द के इलाज हेतु तेल तथा लेप श्री साई मंदिर, एच ब्लॉक, सरोजनी नगर, नई दिल्ली से प्राप्त किया जा सकता है। सम्पर्क करें- प्रीति भाटिया फोन: 9899038181

किसी भी विज्ञापन पर अमल करने से पहले उसकी सत्यता की जांच स्वयं कर लें। प्रकाशक व सम्पादक इसकी प्रमाणिकता के लिए किसी तरह से ज़िम्मेदार नहीं होंगे। विज्ञापन एवं लेखकों की राय से सम्पादकीय का सहमत होना अनिवार्य नहीं।

प्रकाशक, मुद्रक, स्वामी व सम्पादक अंजु टंडन ने रेव स्कैन्स प्रा.लि., ए-27, नारायणा इंडस्ट्रीयल एरिया, फेस-2, नई दिल्ली से छपवा कर एफ-44-डी, एम. आई.जी. फ्लैटस, जी-8 एरिया, हरि नगर, नई दिल्ली-110064 से प्रकाशित किया। RNI No. DELBIL/2005/16236

साई मंदिर ज़ीरा में स्थापना दिवस पर भजन एवं भंडारा

ज़ीरा: दिनांक 20 अप्रैल 2024 को श्री शिरडी साई बाबा सेवा समिति, ज़ीरा द्वारा मल्लोके रोड स्थित साई मंदिर का सातवां मूर्ति स्थापना दिवस हर्षोल्लास के साथ मनाया गया। प्रात: 6 बजे साई मंदिर में गणेश पूजा एवं बाबा का मंगलस्नान किया गया। पंडित मिलन त्रिपाठी जी ने वैदिक मंत्रों के उच्चारण के साथ पूजा अर्चना करवाई। उसके बाद झण्डे की रस्म अदा की गई। पूरे मंदिर को रंग-बिरंगे फूलों एवं लाईटों से सजाया गया। श्री साई महिला परिवार के सदस्यों ने भजन कीर्तन का आयोजन किया। जिसमें शरण दीदी, सुमन सिदौड़ा, मधु शर्मा, कृष्ण ा बावा, सिम्पल जी, सोनिया, रितु राणा, वंदना बांसल, रेनु धुन्ना, निम्रता मुंजाल, सोनिया कोछड़, किरण चोपड़ा, नेहा अरोड़ा, रूपा जुनेजा, किरण जुनेजा, सीमा अरोड़ा, वैशाली धुन्ना, कमलेश तथा रजनी त्रिपाठी भी मौजूद थे। आरती के कार्यक्रम का समापन हुआ। श्री शिरडी साई समिति, ज़ीरा की तरफ से भक्तों के विशाल भंडारे का आयोजन किया गया। मंदिर समिति के प्रधान श्री संदीप शर्मा, गुरप्रीत चोपड़ा, गुरमीत ढल्ल, राकेश राणा, विरेन्द्र गोगा जी, हैप्पी हांडा भी मौजूद रहे।

-निम्रता मुंजाल, ज़ीरा

अलीगढ़ साई मंदिर में नवरात्र एवं रामनवमी पर भक्तों का मेला

अलीगढ़: श्री साई बाबा सिद्धपीठ मंदिर, सारसौल, अलीगढ़ में नवरात्र एवं रामनवमी उत्सव भव्यता पूर्वक मनाया गया। मंदिर परिसर में आयोजित माता के भजनों पर और झांकियों के साथ भक्तगण झूमते दिखे। रंगबिरंगे सुगंधित फूलों व गुब्बारों से सजाए गए मंदिर परिसर में प्रात: साई बाबा का दुग्धाभिषेक किया गया। 108 नामावली हवन व श्री साई सच्चरित्र के पाठ के उपरांत, शाम को दुर्गा

आयोजित धार्मिक कार्यक्रमों में भक्तों का उत्साह देखने लायक था। इस अवसर पर राजकुमार गुप्ता, प्रदीप अग्रवाल, रविप्रकाश, राजा राजानी, विष्णु कुमार बंटी, गिरिराज शर्मा, राकेश बतरा, शिवप्रकाश अग्रवाल, पंकज धीरज, विनायक अग्रवाल, अन्नू अग्रवाल ने सहयोग किया। **-धर्म प्रकाश अग्रवाल**

महारानी की चौकी पर भजन संध्या के साथ भव्य झांकियां प्रस्तुत की गई। जिसके उपरांत आयोजित भंडारे का भक्तों ने आनंद लिया। मंदिर समिति के संस्थापक अध्यक्ष धर्म प्रकाश अग्रवाल जी ने बताया कि साई मंदिर परिसर स्थित नवदुर्गा मंदिर में नवरात्र व रामनवमी के अवसर पर

हरि नगर में सुन्दरकाण्ड का पाठ

दिल्ली: दिनांक 20 अप्रैल 2024 को श्री सुजेय व श्रीमती तनिका ने अपने बेटे सात्विक के जन्मदिवस के शुभ अवसर पर अपने निवास स्थान सी.बी.ब्लॉक, हरि नगर में सुन्दरकाण्ड पाठ का आयोजन किया। श्री राम भक्त मंडल के गुप्ता जी एवं उनके साथी कलाकारों द्वारा सुन्दरकांड का पाठ किया गया। जिसका सभी भक्तों

ने आनन्द लिया। खुशी का मौका होने पर उन्होंने कुछ जन्मदिवस के गीत भी सुनाए। अंत में सात्विक ने केक काटा जो सबको प्रसाद स्वरूप वितरित किया गया। अंत में सबने आरती की और स्वादिष्ट भोजन प्रसाद ग्रहण किया। सभी ने सात्विक को जन्मदिन की शुभकामनाएं दीं। **-राजेन्द्र सचदेवा**

घरेलू उपाय तुलसी के लाभ

अनेक रोगों की एक औषधि तुलसी है। तुलसी एक दिव्य पौधा है। तुलसी की पत्तियां सर्वरोगनाशक हैं। इनका प्रयोग विभिन्न रोगों में कई प्रकार से किया जाता है परन्तु नीचे दी गई विधि से तुलसी की पत्तियों का सेवन करने से प्राय: सभी रोग दूर करने में आश्चर्यजनक सफलता मिलती है। तुलसी की पत्तियों के इस्तेमाल के पहले सर्वप्रथम रोगी की आयु, शक्ति, रोग की प्रकृति और मौसम को ध्यान में रखते हुए मध्यम आकार की, तुलसी की पत्तियों की मात्रा तय कर लेनी चाहिए। तुलसी की प्रकृति गर्म है, अत: गर्मी के मौसम में कम मात्रा और सर्दी में कुछ ज़्यादा मात्रा लेनी चाहिए। यद्यपि कैंसर जैसे गम्भीर रोगों में 25 से 100 पत्तियों (बड़ों के लिए) और 5 से 25 पत्तियां (बालकों के लिए ली जा सकती हैं, फिर भी प्रारम्भ में आवश्यकतानुसार 21 से 35 पत्तियां (बड़ों के लिए) और 3 से 5 पत्तियां (बालकों के लिए) की खुराक लेने से भी अच्छे परिणाम मिले हैं। एक व्यक्ति का कोढ़ जैसा सात साल पुराना चर्म रोग केवल तीन पत्तियां (बारीकतम घोटी हुई) दैनिक सेवन करने से ही ठीक हो गया। गर्म प्रकृति वालों को अधिक मात्रा में तुलसी की पत्तियों के सेवन से शरीर के भीतर जलन या चेहरे आदि पर कदाजित गर्मी के दाने निकल जाए तो ऐसी स्थिति में पत्तियों की मात्रा कम कर दें या प्रयोग बन्द कर दें। मात्रा तय करने के बाद आवश्यकतानुसार तुलसी की पत्तियां लेकर इस्तेमाल से पहले उन्हें स्वच्छ पानी से साफ कर लेना चाहिए।

तुलसी सेवन की सामान्य विधि-

आवश्यकतानुसार 7 से 21 ताज़ी हरी तुलसी की पत्तियां लेकन स्वच्छ खरल या सिलबट्टे (जिस पर मसाला न पीसा गया हो) पर बारीक पीसकर चटनी सी बना लें और इसे 50 से 125 ग्राम दही में मिलाकर नित्य प्रात: खाली पेट 2-3 महिने तक लें। ध्यान रहे कि दही खट्टा न हो। यदि दही माफिक न आए तो इस चटनी में एक-दो चम्मच शहद मिलाकर लें। कफ और श्वसन संस्थान के रोगों तथा छोटे बच्चों को बारीक पिसी हुई तुलसी की पत्तियां शहद में मिलाकर दें। दूध के साथ भूलकर भी न दें। (अन्य औषधियों के साथ तुलसी की पत्तियों की चाय में दूध मिलाया जा सकता है। औषधि की पहली मात्रा सुबह दातुन और मुंह साफ करने के बाद खाली पेट लें। आधा-एक घंटे पश्चात् नाश्ता ले सकते हैं। उपरोक्त विधि से दवा दिनभर में एक बार ही लेना पर्याप्त है परन्तु कैंसर जैसे असहाय दर्द वाले और कष्टप्रद जानलेवा रोगों में दिन में 2-3 बार भी ले सकते हैं। दवा सेवन के दिनों में सुपाच्य शाकाहारी प्राकृतिक भोजन करना चाहिए और तेज़ मिर्च, मसालेदार, चटपटे और तले हुए आहार से बचना चाहिए। साथ ही योग एवं ध्यान, टहलने और लम्बे श्वास की क्रियाओं का अभ्यास किया जाये तो अधिक और शीघ्र लाभ की आशा की जा सकती है।

ऊपर की गई विधि के आवश्यकतानुसार दो-तीन सप्ताह से लेकर दो-तीन मास तक तुलसी का सेवन करने से सर्दी, ताज़ा जुकाम, खांसी, श्वास रोग, बच्चों का दमा, स्मरण शक्ति की कमी, पुराना सिरदर्द, नेत्र पीड़ा, अनेक प्रकार के बुखार आदि कई रोग दूर होते हैं। यह प्रयोग कैंसर में भी लाभ प्रद है। आभार: **स्वदेशी चिकित्सा सार**

श्री स्वयं सिद्ध साई मंदिर में रक्तदान शिविर एवं जांच शिविर

जबलपुर: गुरूवार को श्री स्वयं सिद्ध साई मंदिर परिसर में विशाल स्वास्थ्य शिविर लगाया गया। इस शिविर में ज़रूरतमंद लोगों की निशुल्क जांच की गई। ECG कॉलेस्ट्राल हाड्डियों का कैलशियम, नेत्र, कान,

नाक, गला, B.P. थेलेसीमिया के लिये भी जांच की गई। साथ ही रक्तदान शिविर भी लगाया गया जिसमें कई लोगों ने रक्तदान किया। सभी कार्य सराहनीय रूप से किये गये। डॉ. अश्विनी त्रिवेदी, डॉ. विमल जैन, श्रीकांत साहू, आशुतोष पाठक, अरविंद पांडे, अनंत त्रिवेदी डॉ. आशिमा शर्मा, सेजल जैन आदि ने सबका नि:शुल्क परीक्षण किया। **-चन्द्रशेखर दवे**

श्री राम मंदिर हरि नगर में साई भजन

दिल्ली: हर महीने की भांति इस महिने भी दिनांक 28 अप्रैल को श्री राम मंदिर, हरि नगर में मासिक साई भजन संध्या का आयोजन किया गया। सांय 6:30 बजे से रात 9:00 बजे तक भजनों का गुणगान किया गया। मंदिर में उपस्थित महिलाओं ने भजनों का गुणगान किया और ढोलक पर मास्टर नरेश जी ने उनका साथ दिया। सभी भक्तों ने उनके भजनों का बहुत आनंद लिया। जिन महिलाओं ने पहली बार भजन सुनाए उन्हें राजेन्द्र सचदेवा जी द्वारा बाबा का लॉकेट सम्मान स्वरूप दिया गया। अंत में मंदिर के पंडित जी द्वारा बाबा की आरती की गई और सभी भक्तों को टॉफियां, शक्करपारे, आदि प्रसाद स्वरूप दिये गये। कार्यक्रम का आयोजन राजेन्द्र सचदेवा जी द्वारा भक्तों के सहयोग से किया गया। **-राजेन्द्र सचदेवा**

उस दिन हमारी सारी परेशानियां खत्म हो जाऐंगी जिस दिन हमें यकीन हो जाएगा कि हमारा सारा काम ईश्वर की मर्ज़ी से होता है।

प्रतियोगिता नम्बर 222

नीचे लिखी पंक्तियां श्री साई सच्चरित्र से ली गई हैं, आपको बताना है कि ये कौन से अध्याय से हैं। सही जवाब भेजने वाले को मिलेगा इनाम। अपने जवाब हमें 9818023070 पर whatsapp करें या saisumirantimes@gmail.com पर ई-मेल करें। अपना पता व फोन नंबर भी अवश्य लिखें। इनाम केवल श्री साई सुमिरन टाइम्स के Subscribers को ही दिये जायेंगे।

1. मुझे तो ऐसा देव चाहिए, जो हमें सदा प्यार करे और नित्य नया-नया मिष्ठान खाने को दे।
2. इस स्थान का मार्ग इतना सुगम नहीं, जितना कि कानड़ी संत अप्पा के उपदेश या नाणेघाट पर भैसें की सवारी थी।

पुरस्कार- ✸कंचन सी.एम. मेहरा के सौजन्य से शिरडी आने जाने की स्लीपर क्लास की दो टिकटें। शिरडी टिकट तीन महीने तक ही मान्य है।
✸साई माऊली ट्रस्ट राजपार्क के सौजन्य से बाबा के वस्त्र।

पिछले माह की प्रतियोगिता के सही उत्तर: 1. Temple 2. Chawri

सही जवाब भेज कर शिरडी यात्रा की 2 टिकटों (स्लीपर क्लास) का इनाम जीता है संतनगर, दिल्ली से शशि बाला ने और अन्य ईनाम जीता है सोनीपत से सविता अरोड़ा ने। आपको जल्द ही ईनाम भेजे जायेंगे। हमारा पता है: श्री साई सुमिरन टाइम्स, F-44-D, MIG Flats, G-8 Area, Hari Nagar, New Delhi - 64.

साई धाम मंदिर
उप्पल साउथएण्ड कालोनी सैक्टर-49, गुरूग्राम में शुभ कार्यों के लिए 2 हाल एवं 5 कमरे उपलब्ध हैं।
सम्पर्क करें:
श्री अरूण मिश्रा
फोन: 9350858495, 0124-2230021

सम्पादन मण्डल

मुख्य संरक्षक -सी.एल. टिक्कू, स्वामी बलदेव भारती, राकेश जुनेजा, मोती लाल गुप्ता, सुमित पोंदा, सर्वेन्टस ऑफ शिरडी साई,
मुख्य सलाहकार -स्वामी सत्यानंद महाराज, संदीप सोनवणे, सुरेन्द्र सक्सेना, भरत मेहता, अशोक सक्सैना, सुनील नागपाल, नीरज कुमार, जी.आर. नंदा, अशोक खन्ना, एस.के. सुखीजा, मुकुल नाग, अशोक सोही, मंजु बवेजा
सलाहकार -महेन्द्र दादू, भीम आनंद, मीता साई, के.बी. शर्मा, के.सी. गुप्ता, नरेश मदान, अमित माथुर, सचिन जैन, सुरेन्द्र सेठी, संदीप अरोड़ा
विशेष सहयोग -अमित सरीन, महेन्द्र शर्मा
सम्पादक -अंजु टंडन
सह सम्पादक -शिवम चोपड़ा
उप सम्पादक -मीनू सलूजा,
डिज़ाइनर -गायत्री सिंह
कानूनी सलाहकार -प्रेमेन्द्र ओझा
सहयोगी -राजेन्द्र सचदेवा, कृष्णा पुरी, पूनम धवन, ज्योति राजन, मीरा, कंचन मेहरा, मीनू सिंगला, साईना पुरी, दिनेश चन्द माथुर, मंजीत, अंजली, सुनीता सग्गी, ओंकारनाथ अस्थाना, विवेक चोपड़ा, आंचल मारवा, संजय उप्पल, विशाल भाटिया, सुषमा ग्रोवर, उषा अरोड़ा, योगेश शर्मा, किरण, शैली सिंह, उषा कोहली, रूपलाल अहूजा, राजीव भाटिया, प्रेम गुलाटी, योगेश बहल, सीमा मेहता, वर्षा शर्मा, नीलम खेमका।

-प्रशासनिक कार्यालय-
F-44-D, MIG Flats, G-8 Area, Hari Nagar,
New Delhi -110064, Ph- 9818023070, 9212395615
(सभी पद अवैतनिक हैं)

Publication date- 5th May 2024, Posting date- 9th/10th May 2024, Place of posting- Naraina

India's First International University offering Liberal Education in Arts, Sciences, Technology and Law

www.saiuniversity.edu.in

SAI UNIVERSITY CHENNAI

Sai University (SaiU) Chennai, a state private university in Tamil Nadu, offers a variety of multidisciplinary higher education programs in arts and sciences, technology, and law. The university is led by Mr. K.V. Ramani (Founder and Chancellor) and Prof. Jamshed Bharucha (Vice Chancellor), aiming to set international standards in Indian higher education.

Recognized by University Grants Commission (UGC)

Approved by Bar Council of India

SaiU Undergraduate and Postgraduate Programs (Dayscholar and Residential options available.)

ARTS AND SCIENCES

B.A. (Hons.)

- Economics
- Literature
- Politics, Philosophy, Economics (PPE)
- Psychology, Philosophy (PP)
- Literature, Communication, Creative Expression, Cultural Studies (LCCC)
- Economics and International Relations (EIR)

B.Sc. (Hons.)

- Physics
- Cognitive Neuroscience
- Biological Sciences
- Psychology
- Computer Science
- Mathematics

COMPUTING AND DATA SCIENCE

B.Tech. (4 Years)

- Computer Science
- Data Science
- Computing and Data Science

LAW

- B.A. LL.B. (Hons.) (5 Years)
- LL.M. in Regulation and Governance (1 Year)
- PG Diploma in Technology, Law and Policy (Daksha Fellowship) (1 Year)
- M.A. in Public Policy (2 Year)

- Curriculum with Liberal Education
- Interdisciplinary and Multidisciplinary Studies
- Stellar Governing Board
- Partnerships with International Universities
- Distinguished Global and Indian Faculty
- Student Engagement with Worldwide Academics
- Strong Industry Connections
- Internships and Placements Opportunities

Stellar Board Members

Sai University is governed by a board of members from diverse backgrounds, including Padma awardees such as Mr. N. R. Narayana Murthy (Infosys), Justice M.N. Venkatachaliah (Former Chief Justice of India), Dr. Anil Kakodkar (Atomic Energy Commission of India), Advocate Sriram Panchu (Madras High Court), and other esteemed leaders.

Eminent Faculty

The faculty team at Sai University is headed by Prof. Jamshed Bharucha. The team is guided by the renowned Stellar International Advisory Board, which includes esteemed academics from Tufts University, Warwick University, Stanford University, Georgia State University, and other prestigious institutions.

+91 91500 75661, 62, 63

apply.saiuniversity.edu.in

admissions@saiuniversity.edu.in

Follow us on

SCAN TO APPLY